

પ્રસ્તાવના.

સયે સુદ્ધ જૈનયાંધવોને માણુમ થાય જે શ્યા શ્રી
“વૈરાગ્યોપદેશક વિવિધપદ સંગ્રહ.” નામનો અ-
ત્યંત રમણીક, વૈરાગ્યથી જરેલો, સંસાર સ્વરૂપને
ચતાવનારો, તથા પદોનાં ચમત્કારોથી જરેલો ગ્રંથ
આપણા મહામાનનીક ડાપાધ્યાય શ્રી યશોવિજય-
જી; વિનયવિજયજી તથા જ્ઞાનસારજી મહારાજે
રચેલ છે, તેમાં પ્રથમ “જસવિલાસ” પંડિત યશો-
વિજયજી કૃત, તથા “વિનયવિલાસ” પંડિત વિનય
વિજયજી કૃત, અને “જ્ઞાનવિલાસ” પંડિત જ્ઞાન
સારજી કૃત છે. આ ગ્રંથ પટલો તો રસિક તથા જૈ-
નવર્ગના શ્રાવક, શ્રાવિકાઈને માટે ઉપયોગી છે કે-
તેનું અગ્રે પ્રસ્તાવનામાં કંઈ પણ વર્ણન નહિ કરતાં,
અમો તે ગ્રંથ, આધથી તે અંતસુધિ વાંચીને તેનો
રહસ્ય હૃદયમાં ધારણ કરવાની અમારા સુદ્ધ જૈન
યાંધવોને જલામણ કરીએ ઠઈયે તથા કેટલાંક
દૃષ્ટી દોષ અને બુદ્ધિ દોષ રહી ગયા હશે તેનું અ-

वसुधोकन करीने सर्व श्रेष्ठ पुरुषो दामा पूर्वक सुश-
रिने वांचशो. इत्यलं विस्तरेण.

ता १५ मी मे
शने १९०२.

छां. श्रावक,
जीमसिंह माणेकना,
कार्य प्रवर्तको.

॥ अथ ॥

॥ श्रीजशविलास प्रारंभः ॥

॥ पद पदेखुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ चेतन ज्ञानकी दृष्टि नि-
हाखो ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ मोह दृष्टि देखे सो घा-
जरो, होत महा मत्तपाखो ॥ चेतन० ॥ १ ॥ मोह दृष्टि
अति चपल करतहे, जब घन वानर पाखो ॥ योग
वियोग दावानल लागत, पावत नांहि विचाखो ॥
चेतन० ॥ २ ॥ मोह दृष्टि पायर नर डरपें, करे अ-
कारन टाखो ॥ रन मैदान खरे नहीं अरिसुं, सूर
खरेज्युं पाखो ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ मोह दृष्टि जन जनके
परवश, दीन अनाथ डुखाखो ॥ मागे जीख फरे घर
घरसुं, कहे मुऊकुं कोउ पाखो ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ मोह
दृष्टि मद मदिरामाती, ताको होत उठाखो ॥ पर
अवगुन राचे सो अहनिस, काग असुचि ज्यों काखो ॥
चेतन० ॥ ५ ॥ ज्ञान दृष्टिमां दोष न एते, करे ज्ञान
अजुआखो ॥ चिदानंद धन सुजस वचन रस, स-
ज्जन हृदय पखाखो ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग सारंग ॥ कंतविनु कहो कौन गति नारी
 ॥ टेक ॥ सुमति सखी जइ वेगी मनावो, कहे चे-
 तन सुन प्यारी ॥ कंत० ॥१॥ धन कन कंचन महल
 माखिष, पिउ विन सचहि उजारी ॥ निद्राजोग
 लहु सुखनांही, पियु वियोग तनु जारी ॥ कंत० ॥२॥
 तोरे प्रीत पराइ डुरिजन, अठते दोष पुकारी ॥ घर
 जंजनके कहन न कीजें, कीजे काज विचारी ॥ कंत०
 ॥३॥ विज्रम मोह महामद विजुरी, माया रेन अं-
 धारी ॥ गर्जित अरति लवे रति दाडुर, कामकी
 जइ असवारी ॥ कंत० ॥४॥ पिउ मिलवेकुं मुज मन
 तलफे, में पिउ खिजमतगारी ॥ चुरकी देइ गये पिउ
 मुजकुं, न लहे पीर पीयारी ॥ कंत० ॥ संदेश सुनी
 आप पिउ उत्तम, जइ बहुत मनुहारी ॥ चिदानंद
 धन सुजस विनोदें, रमे रंग अनुसारी ॥ कंत० ॥६॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ परमगुरुजेन कहो क्यों होवे,
 गुरु उपदेश विना जन मूढा, दर्शन जैन विगोवे ॥
 परम गुरु जैन कहों क्यों होवे ॥ टेक ॥१॥ कहत कृ-

पानिधि समजस जीखे, कर्म मयस जो धोवें ॥ व-
 हुल पापमस श्रंग न धारे, शुद्ध रूप निज जोवे ॥ प-
 रम॥१॥ स्यादवाद पूरन जो जाने, नय गर्जित ज-
 स वाचा ॥ गुन पर्याय ड्रव्य जो बूजे, सोइ जैन हे
 साचा ॥ परम॥ ३ ॥ क्रिया मूढमति जो अज्ञानी,
 चाखत चाख अथपूरी ॥ जैनदशा उनमेही नाही,
 कहे सो सबही जूँ ॥ परम॥४॥ पर परनति अथपनी
 कर माने, फिरिया गवें घेहेसो ॥ उनकुं जैन कहो
 क्युं कहियें. सो मूरखमें पहिलो ॥ परम॥५॥ ज्ञान
 जाव ज्ञान सधमांही, शिव साधन सईहिण ॥ नाम
 जेगवमें काम न सीजे, जाव उदामे रहिण ॥ परम॥
 ६॥ ज्ञान सकल नय साधन साधो. क्रिया ज्ञानकी
 दासी ॥ क्रिया करत धरतुहे ममता. याहि गलमें
 फांसी ॥ परम॥७॥ क्रिया बिना ज्ञान नहिं कबहुं.
 क्रिया ज्ञान बिनु नाई ॥ क्रिया ज्ञान दोउ मिखन
 रहतुहे, उषों जस रम जसमांही ॥ परम॥ ८॥
 क्रिया भगनता बाहिर दीमन, ज्ञान शक्ति जम
 जांजे ॥ सदगुरु शीख सुने नही कबहुं. सो जन ज-
 नतें खाजे ॥ परम॥९॥ सत्त्व बुद्धि जिनकी परनति

हे, सकल सूत्रकी कूंची ॥ जग जसवाद वदे उन
हींको, जैन दशा जस जंची ॥ परम० ॥१०॥ इति॥

॥ पद चौथुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ परम प्रभु सब जन शब्दै
ध्यावे ॥ जब लग अंतर जरम न जाजे, तबलग को-
जंन पावे ॥ परम प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥ सकल अंस
देखे जग जोगी, जो खिनु समता आवे ॥ ममता
अंध न देखे याको, चित्त चिहुं उरे ध्यावे ॥ परम
प्रभु०॥२॥ सहज शक्ति अरु जक्ति सुगुरुकी, जो चित्त
जोग जगावे ॥ गुण पर्याय अव्यसुं अपने, तो लय
कोल लगावे ॥ परम प्रभु० ॥ ३ ॥ पढत पुरान वेद
अरु गीता, मूरख अर्थ न जावें ॥ इत ऊत फरत
प्रहृत रसनाही, ज्यों पशु चर्वित चावे ॥ परम प्रभु०
॥४॥ पुजलसैं न्यारो प्रभु मेरो, पुजल आप विपावे ॥
उनसैं अंतर नहीं हमारे, अब कहां जागो जावे ॥
परम प्रभु० ॥ ५ ॥ अकल अलख अज अजर निरं-
जन, सो प्रभु सहज सुहावे ॥ अंतरजामी पुरन प्र-
गढ्यो, सेवक जस गुन गावे ॥ परम प्रभु० ॥६॥ इति॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ चेतन जो तुं ज्ञान अ-
 न्यासी ॥ आपहि घांघे आपहि ठोढे, निजमति
 शक्ति धिकासी ॥ चेतन० ॥१॥ टेक ॥ जो तुं आप
 स्वजायें खेले, आसा ठोरी उदासी ॥ मुरनर किन्नर
 नायक संपति, तो तुज घरकी दासी ॥ चेतन० ॥२॥
 मोह चोर जन गुन धन लूसे, देत आस गल फांसी ॥
 आसा ठोर उदाम रहेजो, सो उत्तम संन्यासी ॥
 चेतन० ॥ ३ ॥ जोग लइ पर आस धरतहे, याही
 जगमें हांसी ॥ तुं जाने में गुनकुं संचुं, गुनतो जावे
 नासी ॥ चेतन० ॥४॥ पुज्यकी तुं आस धरतहे, सो तो
 सबहिं विनासी ॥ तुं तो निन्नरूप हे उनतें. चिदा-
 नंद अविनासी ॥ चेतन० ॥५॥ धन घरचे नर धहुन
 गुमाने, करवत लेंवे कामी ॥ तोर्जी दुःखको अंत न
 आवे, जो आसा नहिं धासी ॥ चेतन० ॥६॥ सुखजल
 विषम विषय मृगतृष्णा, हान मृदमति प्यासी ॥
 विघ्नम जूझि जइ पर आमी. तुं तो सहज विखामी
 ॥ चेतन० ॥ ७ ॥ याको पिता मोह दुःख ज्ञाना. होत
 विषय रति मासी ॥ जव मुन जरता अघिरति प्राणी,

मिथ्यामति हे हांसी ॥ चेतन० ॥ ८ ॥ आसा ठोर
 रहे जो जोगी, सो होवे सिव वासी ॥ उनको सुजस
 बखाने झाता, अंतरदृष्टि प्रकासी ॥ चेतन० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पद ठहुं ॥

॥ राग कनडो ॥ अजब गति चिदानंद धनकी
 ॥ टेक ॥ जव जंजाल शक्तिसुं होवे, उलट पुलट
 जिनकी ॥ अजब० ॥ १ ॥ जेदी परनति समकित पायो,
 कर्मवज्र धनकी ॥ ऐसी सबल कठिनता दीसे, को-
 मलता मनकी ॥ अजब० ॥ २ ॥ जारी झूमि जयं-
 कर चूरी, मोहराय रनकी ॥ सहज अखंड चंमता
 याकी, उमा विमल गुनकी ॥ अजब० ॥ ३ ॥ पाप-
 वेदी सव ज्ञान दहनसे, जाली जववनकी ॥ शीत-
 लता प्रगटी घट अंतर, उत्तम लछनकी ॥ अजब०
 ॥ ४ ॥ ठकुराई जगजनते अधिकी, चरन करन ध-
 नकी ॥ कृद्धि वृद्धि प्रगटे नीज नामे, ख्याति अकिं-
 चनकी ॥ अजब० ॥ ५ ॥ अनुजवविनु गति कोउ न
 जाने, अलख निरंजनकी ॥ जस गुन गावत प्रीती
 निवाहो, उनके समरनकी ॥ अ० ॥ ६ ॥

जशविद्यास

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ जिउ लाग रह्यो परजावमें, टे-
क ॥ सहज स्वभाव छखे नहिं अपनो, परियो
मोह जंजावमें ॥ जिउ० ॥ १ ॥ वंठे मोह करे न-
हिं करनी, डोखत ममता बाउमें ॥ चहे अंध जुं
जखनिधि तरवो, चेरो कांणै नाउमें ॥ जिउ० ॥ २ ॥
अरति पिशाची परवश रहेतो, खिनहु न समख्यो
आउमे ॥ आप वचाय सकत नहिं मूरख, घोर वि-
पयके घाउमें ॥ जिउ० ॥ ३ ॥ पूर्वपुण्य धन सबहिं ग्र-
सतहे, रहत न मूख बढाउमें ॥ तामें तुज केसे धनी
आवे, नय व्यवहारके दाउमें ॥ जिउ० ॥ ४ ॥ जस
कहे अध मेरो मन छीनो, श्रीजिनवरके पाउमें ॥
याहि कल्याण सिद्धिको कारन, जुं वेधकरस
खाउमें ॥ जिउ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग बिछाउस ॥ मेरे साहिब तुम हि हो, श्री
पास जिणंदा ॥ खिजमतगार गरीब हुं, मे तेरा बं-
दा ॥ मेरे० ॥ १ ॥ टेक ॥ मैं चकोर करूं चाकरी,
जय तुमहिं बंदा ॥ चक्रवाक मैं दुइ रहों, जय

तुमहिं दिणंदा ॥ मेरे० ॥ २ ॥ मधुकरपरे में रन-
 जनुं, जब तुम अरविंदा ॥ चकि करो खगपति
 परे, जब तुमहिं गोविंदा ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तुम जब
 गर्जित धन जये, तब में शिख बंदा ॥ तुम सायर
 जब में तदा, सुरसरिता अमंदा ॥ मेरे० ॥ ४ ॥
 दूर करो दादा पासजी, जषडुःखका फंदा ॥ वाचक
 जश कहे दासकुं, दियो परमानंदा ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ पद नवसुं ॥

॥ राग सामेरी ॥ मेरे प्रजुसुं प्रगत्यो पूरन राग
 ॥ ऐक ॥ जिन गुन चंद किरनसुं उमग्यो, सहज
 समुझ अथाग ॥ मेरे० ॥ १ ॥ ध्याता ध्येय जये
 दोउ एकहु, मिट्यो जेदको जाग ॥ कुल विदारी
 ठले जब सरिता, तब नहिं रहत तडाग ॥ मेरे० ॥
 ॥ २ ॥ पूरन मन सब पूरन दीसे, नहिं दुधिधाको
 लाग ॥ पाउ चखतपनही जे पहिरे, नहि तस
 कंटक लाग ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ जयो प्रेम लोकोत्तर जूगो,
 लोक बंधको ताग ॥ कहो कोउ कनु हमतो न रूचे,
 टुटि एक वीतराग ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ वासत हे जिन
 गुन मुज दिखकुं, जेसो सुरतरु वाग ॥ और वास-

नाखगेन तातें, जस कह्ये तुं बडजाग॥ मेरे ॥५॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग गोडसारंग तथा पूर्वी ॥ पसारी कर
लीजे, इच्छुरस जगवान ॥ चढत सिखा श्रेयांस कुम-
रकी, मानु निरमल ध्यान ॥ पसारी० ॥ १ ॥ टंक ॥
में पुरुषोत्तम करकी गंगा. तुं तो चरन निदान ॥
इत गंगा अंधर तर जनकुं, मानुं चली असमान ॥
॥ पसारी० ॥ २ ॥ किधो विधु विंव सुधामुं चाहन,
आप मधुरता मान ॥ किधो दायककी पुण्य परंपर.
दाखन सरगविमान ॥ पसारी० ॥ ३ ॥ प्रजुकर इ-
च्छुरस देखी करत हे. ऐसी उपमा जान ॥ जश
कह्ये चित विन पात्र मिखावें, युं नविकुं जिन जा-
न ॥ पसारी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद अगीन्यागमुं ॥

॥ राग अट्टाणो ॥ शीतल जिन मोहि न्याग ॥
टंक ॥ नुवन विरोचन एकज खोचन. जिउकें जिउ
हमारा ॥ शीतल० ॥ १ ॥ ज्योतिशुं ज्योत मिलन जव
ध्यावें. होवन नहि नव न्याग ॥ बांधी मूर्ती खुसे
जव माया, मिटे महा भ्रम जाग ॥ शीतल० ॥ २ ॥

तुम न्यारे तव सबहि न्यारा, अंतर कुटुंब उदारा ॥
 तुमहीं नजिक नजिक हे सबहीं, रुझि अनंत थ-
 पारा ॥ शीतल० ॥ ३ ॥ विषय लगनकी अगनि बू-
 जावत, तुम गुन अनुभव धारा ॥ जइ मगनता तुम
 गुनरसकी, कुन कंचन कुन दारा ॥ शीतल० ॥ ४ ॥
 शीतलता गुन होर करत तुम, चंदन काहू विचारा ॥
 नामेहीं तुम ताप हरतदे, वाकुं घसत घसारा ॥
 ॥ शीतल० ॥ ५ ॥ करहु कष्ट जन बहुत हमारे,
 नाम तिहारो आधारा ॥ जस कहे जनममरण ज-
 य जागो, तुम नामे जवपारा ॥ शीतल० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद वारसुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ प्रभु तेरो वचन सुन्यो जय-
 हीथें सुविहान ॥ टेक ॥ तबहीथें तत्व दाख्यो, चा-
 ख्यो रस ध्यान ॥ जाव नाली ए जागी, मानुं कीधो
 सुधापान ॥ प्रभु तेरो० ॥ १ ॥ श्रुतचिंता झान सोतो,
 खीर नीर वान ॥ विषय तृष्णा बुकावे, सोहि साचो
 झान ॥ प्रभु तेरो० ॥ २ ॥ गायन हरन तातें, नादे
 धरे कान ॥ तेसेहिं करत मोहिं, संत गुन ध्यान
 ॥ प्रभु तेरो० ॥ ३ ॥ प्रानतें अधिक सांझ, केसे कहुं

प्रान ॥ प्रानथी अजिन्न दाख्यो, प्रत्यक्ष प्रमान ॥
 प्रजु तेरो ॥ ४ ॥ जिन्न ने अजिन्न कहु, स्याछादें वान ॥
 जस कहे तु हैं तु हैं, तुं हैं जिन जान ॥ प्र० ॥ ५ ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग परज ॥ चेतन राह चले जसदे ॥ टेक ॥
 नखशिखखो धंधनमां चेठे, कुगुरु वचन गुलटे ॥
 चेतन० ॥ १ ॥ विषय विपाक जोग सुख कारन, ठि-
 नमें तुम पलटे ॥ चाखी ठोर सुधारस समता, ज-
 वजल विषय घटे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ जयोदधि जि-
 च रहे तुम ऐसे, थावत नाहिं तटे ॥ जिहां ति-
 मिंगल घोर रहतुहे, चार कपाय कटे ॥ चेतन० ॥
 ॥ ३ ॥ धरविलास वनिता नयनके, पडे पास पल-
 टे ॥ अथ परवश जागे किहां जाथोगे, जाखे मोह-
 जटे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ मन मेखे जो किरिया कीनी,
 ठगे लोक कपटे ॥ उनकुं फलधिनुं जोग मिटेगो,
 तुमकुं नाहिं रटे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ सीख सुनी अथ
 रहो सुगुरुके, चरणकमल निकटे ॥ युं करते तुम
 सुजस सहोगे, तत्त्व ज्ञान प्रगटे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद चौदसुं ॥

॥ राग नायकी कनडो ॥ चेतन समता ठांड परी
 री, दूर परीरी ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ पर रमनिसुं प्रे
 म न कीजें, आदरी समता आप वरीरी ॥ चेतन० ।
 ॥ १ ॥ समता मोह चंडालकी वेटी, समता संयम
 नृप कुमरीरी ॥ समता मुख दुर्गंध असत्यें, सम
 ता सत्य सुगंध जरीरी ॥ चेतन० ॥ २ ॥ समतासैं
 खरते दिन जावे, समता नहिं कोउ साथ खरीरी,
 समता हेतु बहुत हे दुश्मन, समताके कोऊ न अ
 रीरी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ समताकी दुर्मति हे आखी,
 डाकिनी जगत अनर्थ करीरी ॥ समताकी शुभम
 ति हे आखी, परउपगार गुणें समरीरी ॥ चेत
 न० ॥ ४ ॥ समता पुत्त जण कुल खंपन, सोक वि
 योग महा मत्सररीरी ॥ समता सुत होवेगे केवल,
 रहे दिव्य निशान धुरीरी ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ सम
 ता मग्न रहे जो चेतन, जो ए धारे शीख खरीरी ॥
 सुजसविलास लहेगो तो तुं, चिदानंदधन पदवि
 वरीरी ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पन्नरमुं ॥

॥ राग नायकी कनडो॥या गति कौन हे सखी तोरी,
 कोन हे सखी तोरी ॥ टेक ॥ इत उत युंहि फिर-
 त हे घहेली, कंत गयो चित्त चोरी ॥ यागति० ॥ १ ॥
 चित्तवत हे विरहानल बुझवत, सिंच नयन जल
 जोरी ॥ जानत हे उहां हे घडवानल, जलण ज-
 ल्यो जिहुं ओरी ॥ यागति० ॥ २ ॥ चल गिरना-
 र पिया दिखलावुं, नेह निहावन धोरी ॥ हृदिमिदि
 मुगति मोहोखमें खेले, ग्रनमे जस या जोरी ॥ याग-
 ति० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ हम मगन जए प्रभु ध्यानमें,
 टेक ॥ विसर गइ डुविधा तन मनकी, अचिरा सु-
 त गुन ज्ञानमें ॥ हम० ॥ १ ॥ हरिहर ब्रह्म पुरंद-
 रकी श्रुति, थावत नांहि कोल मानमें ॥ चिदानंद-
 की मोज मची हे, समतारसके पानमें ॥ हम० ॥
 ॥ २ ॥ इतने दिन तुं नांहि पिठान्यो मेरो, जन्म
 गमायो अजानमें ॥ अचतो अधिकारी होइ चेठे,
 प्रभु गुन अखय खजानमें ॥ हम० ॥ ३ ॥ गइ दी-

नता सबही हमारी, प्रभु तुज समकित दानमें ॥
 प्रभु गुन अनुभवके रस आगे, आवत नही कोउ
 म्यानमे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जिनहि पाया तिनहि ठि-
 पाया, न कहे कोउके कानमें ॥ ताली छागी जब
 अनुभवकी, तब जाने कोउ शानमें ॥ हम० ॥ ५ ॥
 प्रभु गुन अनुभव चंद्रहास्य ज्यो, सोतो न रहे म्या-
 नमें ॥ वाचक जश कहे मोह महा अरि, जीत
 लीयो हे मेदानमें ॥ हम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ देखतही चित्त चोर लीयो हे,
 देखतही चित्त चोर लीयो ॥ सामको नाम रुचे
 मोहि अहनिस, साम विना कहा काज जीयो ॥
 देखतही० ॥ १ ॥ टेक ॥ सिद्धबधूके लीए मुण
 ठोरी, पशुथनके सिर दोष दीयो ॥ परकी पीर न
 जाने तासों, बैर बसायो जो नेह कीयो ॥ देखत-
 ही० ॥ २ ॥ ग्रान धरुं में ग्रानपिया चिन, बज्रहथें
 मोहि कठिन हियो ॥ जस प्रभु नेमि मिले दुःख
 ढास्यो, राजुल शिवमुख अमृत पियो ॥ देखत
 ही० ॥ ३ ॥ इति ॥

जशविषास

॥ पद अठारमुं ॥

॥ राग कल्याण ॥ सखुने प्रजु जेदे, अंतरीक प्र-
जु जेदे ॥ स० ॥ टेक ॥ जगत वधख हित दाइ,
स० ॥ मोह खोर जव जोर फिरावत, तव समरवो
प्रजु जेदे ॥ स० ॥ १ ॥ खोर सखाइ चार दिवस-
के, साच सखा प्रजु बेठे ॥ इतनो थाप विवेक वि-
खारो, मायामें मत खेदे ॥ स० ॥ २ ॥ जामणडे
तो झूख न जांगे, विनुं जोजन गए पेदे ॥ जगवंत
जकि धिना सवि निष्कल, जस कहे जकिमें
जेदे ॥ स० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणीशमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जिन चरण सरन ग्रहुं ॥
टेक ॥ हृदयकमलमें ध्यान धरतुहे, सिर तुज आ-
ण ग्रहुं ॥ जिन० ॥ १ ॥ तुज सम खोख्यो देव ख-
खकमें, पैद्यें नाहिं कहुं ॥ तेरे गुनकी जपुं जपमा-
खा, थहनिस्ति पाप दहुं ॥ जिन० ॥ २ ॥ मेरे मनकी
तुम सब जानो, क्या मुख बहुत कहुं, कहे जस वि-
जय करो तुम साहिब, ज्युं जव दुःख न लहुं ॥
जिन० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ अजब धनीहै जोरी,
 अर्धग धरीहै गोरी ॥ शंकर शंकहि ठोरी, गंगसिर
 धरीहै ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रेमके पीवत प्यासे, होत म-
 हा मतवासे, न चखत तिहूं पासे, असवारी सरी
 है ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञानीको एसो उत्साह, समता-
 के गले बांह, सिरपर जगनाह, थाण सुर सरीहै
 ॥ अ० ॥ ३ ॥ लोकके प्रवाह नांहि, सुजस वि-
 खास मांहि, चिदानंदधन ठाहि, रति अनुसरी
 है ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ धर्मके विखास वास, ज्ञा-
 नके मन्दा प्रकास, दास जगवंतके, उदास नाव
 खगे हैं ॥ समता नदीनरंग, थंगही उपंग चंग, म-
 ज्ञान प्रसंग रंग, थंग जगमगेहें ॥ धर्म० ॥ १ ॥
 कर्मके संप्राम घोर, सरे महा मोह घोर, जोर ता-
 को तोरवेंकूं, सावधान जगेहें ॥ शीशको धरी स-
 नाह, धनुष्य महा उत्साह, ज्ञान धानके प्रवाह, राय
 घेरी नगे हैं ॥ धर्म० ॥ २ ॥ थापो दे प्रथम सेन,

॥ ३ ॥ जब लीला वासित सुर डारे, तुं पर
 लवारी ॥ मैं मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आण
 सिरधारी ॥ कृपज० ॥ ४ ॥ ऐसो साहिव नहिं को
 ल जगमें, यासुं होय दिखदारी ॥ दिखहि दसास
 प्रेमके धिचे, तिहां हठ खेंचे गमारी ॥ कृपज० ॥ ५ ॥
 तुमहि साहिव मैं हुं बंदा, या मत देऊ विसारी ॥
 श्रीनयविजय विबुध सेवकके, तुमहो परम उपका-
 री ॥ कृपज० ॥ ६ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग बेलावल ॥ गौतम गणधर नमियें हो,
 अह्निसि गौतम गणधर नमियें ॥ टेक ॥ ना-
 म जपत नवही निधि पइए, मन बंठित सुख खहि-
 एं हो ॥ अह० ॥ १ ॥ घर अंगन जो सुरतरु फ-
 लियो, कहा काज धन जमियें ॥ सरस सुरजि घृत
 जो हुवे घरमें, तो क्यों तैसे जमियें हो ॥ अह० ॥
 ॥ २ ॥ तेसी श्रीगौतम गुरु सेवा, और गोर कपु-
 रमियें ॥ गौतम नामें जबजस तरियें, कहा धदुत
 तनु दमियें ॥ अह० ॥ ३ ॥ गुण अनंत गौतमके स-
 मरन, मिथ्यामति विष गमियें ॥ जस कहे गौतम

दीशे, वेतो अपने पास ॥ अथ० ॥ ३ ॥ ओर कब
 हुं कोउ कारन कोण्यो, बहुत उपाय न तूसे ॥ चि-
 दानंदमें मगन रहतुहे, वेतो कबहुं न रुसे ॥ अथ० ॥ ४ ॥
 ओरनकी चिंता चिंतीन मिटे, सब दिन धंधे जावे ॥
 थिरता गुन पूरन सुख खेले, वेतो अपने जावें ॥
 अथ० ॥ ५ ॥ पराधीन है जोग ओरको, जातें होत
 वियोगी ॥ सदा सिद्ध समताइ विलासी, वेतो निजगुन
 जोगी ॥ अथ० ॥ ६ ॥ ज्यों जानो त्यों युगति न
 जानो, मैं तो सेवक उनको ॥ पदपात तो परसुं होवे,
 राग धरतहुं गुनको ॥ अथ० ॥ ७ ॥ जाव एक है
 सब ज्ञानीको, मूरख जेद न जावे ॥ अपनो साहि-
 ब जो पहिचाने, सो जस लीला पावे ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ पद ठवीशमुं ॥

॥ राग भूप कल्याण ॥ सयनकी नयनकी धयनकी
 ठधी नीकी ॥ मयनकी गोरीतकी लग्नी मोहि अ-
 वियां ॥ मनकी लगन जर अंगनीय लागे अली, क-
 खन परत कलु कहा कहुं बतीयां ॥ सयनकी० ॥ १ ॥
 मोहन मनाउ मानी, कहा बनी रति ठानी, शिवा
 नंदन मानो बिनतियां ॥ गुन गहो जस

॥ पद अष्टावीशमुं ॥

॥ राग केदारो दरवारी ॥ आवे हाथी दल सा-
ज गाजते, नेमजी घर आवे, ए देशी ॥ प्रभुवल दे-
खी सुरराज, लाजतो इम धोले ॥ देखो वल जांग्यो
जम सेरो, कोनहि जग तुम तोले ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
टेक ॥ चरन अंगुठे कंपित सुरगिरि, मानुं नाचत
डोले ॥ इन मिसि प्रभु मोहि उपर तूठे, हरख हि-
याको खोले ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ मरत शेषधर हरत
महोदधि, जय जंगुर जूगोले ॥ दिसि कुंजर दि-
ग्मूढ जए तव, सग्रहिं मिलत एक टोले ॥ प्रभु० ॥
॥ ३ ॥ लीला बाल अवाल पराक्रम, तीन जुवन
धंधोले ॥ जस प्रभु वीर महेर अय कीजें, बहुरि हुन
परिहु जोले ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद द्योगणत्रीशमुं ॥

॥ राग उपर प्रमाणे ॥ प्रभु धरी पीठ बेताल
वाल, सात तासलों बाधे ॥ कास रूप विकराल ज-
यंकर, लागत अंधर आवे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ टेक ॥
वाल कहे को वीरसे गयो, परिजन देव आराधे ॥
तिस्र त्रिजाग चित्त वीर न खोज्यो, यस अनंत कुन

रस थंजन, डुरजन रवि जरनी ॥ तुज मूरत निरखे
सो पावे, सुखजस लील घनी ॥ श्रवण॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग प्रजाति ॥ विमलाचल नित वंदिये, की-
जे एहनी सेवा ॥ मानु हाथ ए धर्मनो, शिवतरु
फल देवा ॥ विमलाचल० ॥ १ ॥ टेक ॥ उज्ज्वल
जिनग्रह मंडले, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानु हिमगि-
रि विन्नमे, आइ अंबर गंगा ॥ विमलाचल० ॥ २ ॥
कोइ अनेरु जग नहीं, तीरथ ए तोले ॥ एम श्री
मुख आगलें, श्री सीमंधर बोले ॥ विमलाचल० ॥
॥ ३ ॥ जे सघलां तीरथ करे, यात्रा फल लहिएं ॥
तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगुणु फल लहिएं ॥ वि-
मलाचल० ॥ ४ ॥ जन्म सफल होए तेहनो, जो
ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर
नंदे ॥ विमलाचल० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद वत्रीशमुं ॥

॥ राग देव गंधार ॥ देखो माइ अजय रूप जि-
नजीको ॥ देखो॥ टेक ॥ उनके आगे थोर सबन-
को, रूप लगे मोहि फीको ॥ देखो॥ १ ॥ लोचन

घन धाम ॥ जटाधार बट जस्म लगावत, रासज स
 द्रुत हे घाम ॥ जवलग ० ॥ ३ ॥ एतेपर नहीं यो-
 गकी रचना, जो नहि मन विश्राम ॥ चित अंतर
 पर ठसवेकुं चिंतवन, कहा जपन मुग्ध गम ॥ जव-
 लग ० ॥ ४ ॥ वचन काय गोपें दृढ न धरे, चित
 तुरंग लगाम ॥ नामे नुं न सहे शिवसाधन, जिठ
 कण मुने गाम ॥ जवलग ० ॥ ५ ॥ पढो ज्ञान धरो
 संजम किग्या, न किगयो मन गाम ॥ चिदानंद
 घन मुजम विसर्मा, प्रगटे आनमगम ॥ जवलग-
 ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रांशम् ॥

॥ गग मोरना ॥ चतुरनर सामायक नय भागे
 ॥ देक ॥ लोक प्रवाद नांदकर अपनी, परिणति
 गुरु विचारो । चतुरनर ० ॥ १ ॥ इत्यन आख्य
 अतंग आत्मा, सामायक निज जाने । गुरुद्वय
 समनामय कर्त्तृत्वं मयद नयक, जाने ॥ चतुरन
 र ० ॥ २ ॥ अथ व्यवहार कहे य नय जन, सामा
 यक दृष्ट जाने । नान आचरना मा माने एमा ने-
 गम गावे ॥ चतुरनर ० ॥ ३ ॥ आचरना गितुमृष

सिधलकी, धिनु उपयोग न माने ॥ आचारी उपयो-
गी आत्म, सो सामायक जाने ॥ चतुरनर० ॥ ४ ॥
शब्द कहे संजत जो ऐसो, सो सामायक कहियें ॥ चो-
खे गुनगाने आचरना, उपयोगें जिन लहियें ॥ चतु-
रनर० ॥ ५ ॥ अग्रमत्त ठाणे इर्याको, समजिरूढ
नय साखी ॥ केवल ज्ञान दशा यिति उनकी, एव-
जृते जाखी ॥ चतुरनर० ॥ ६ ॥ सामायक नय जो
हु न जाने, लोक कहे सो माने ॥ ज्ञानवंतकी सं-
गति नाहीं, रहियो प्रथम गुनगाने ॥ चतुर० ॥ ७ ॥
सामायक नर अंतर दृष्टे, जो दिनदिन अज्यासें ॥
जग जसवाद लहे सो बेगो, ज्ञानवंतके पासें ॥
चतुरनर० ॥ ८ ॥

॥ पद उत्रीशमुं ॥

॥ राग विहागडो ॥ सबल या ठाक मोह मदि
राकी ॥ टेक ॥ मिथ्यामतिके जोरे गुरुकी, वचन
शक्ति जिहां थाकी ॥ सबल० ॥ १ ॥ निकट दशा
ठांम जरुं उंची, दृष्टि देतहे ताकी ॥ न करे किरिया
जनकुं जाखे, नहिं जवयिति पाकी ॥ सबल० ॥ २ ॥
जाजन गत जोजन कोउ ठांडी, दसत्तर जिजं दोरे ॥

॥ पद ओगणचावीशमुं ॥

॥ राग शोनी ॥ चिदानंद अविनासीहो, मेरो
 चिदानंद अविनासी हो ॥ टेक ॥ कोर मरोर कर-
 मकी मेटे, सहज स्वभाव विलासीहो ॥ चिदानंद० ॥
 ॥ १ ॥ पुजल मेल खेलजो जगको, सोतो सबहि
 विनासीहो ॥ पूरन गुन अध्यात्म प्रगटें, जागे जोग
 उदासीहो ॥ चिदानंद० ॥ २ ॥ नाम जेख किरिया-
 कुं सवही, देखे लोक तमासीहो ॥ चिन मूरत चे-
 तन गुन चिने, साचो सोउ सन्यासीहो ॥ चिदानं-
 द० ॥ ३ ॥ दोरी देवारकी किति दोरे, मति व्यव-
 हार प्रकासीहो ॥ अगम अगोचर निश्चय नयकी,
 दोरी अनंत अगासी हो ॥ चिदानंद० ॥ ४ ॥ ना
 नाघटमें एक पिठाने, आतमराम उपासी हो ॥ जे-
 द कल्पना में जरु जूझ्यो, सुब्ब्यो तृष्णा दासीहो ॥
 चिदानंद० ॥ धर्म सिद्धि नवनिधि हे घटमें, कहा
 दुंदुत जइ काशीहो ॥ जस कहे शांत सुधारस चा-
 र्यो, पूरन ब्रह्म अन्यासीहो ॥ चिदा० ॥ ६ ॥

॥ पद चावीशमुं ॥

॥ राग हारी ॥ हरी नारी टोखे मित्रि रंग हो

होरी ॥ टेक ॥ फाग रमे तजी छाल, रंग हो होरी, देव-
 रकुं घेर रही ॥ रंगहो ॥ व्याह मनावन काज
 छाल ॥ रंग ॥ १ ॥ ताल कंताल मृदंगसुं ॥ रं-
 ग ॥ मधुर घजावत चंग छाल ॥ रंग ॥ गयव
 गुलाल नयन जरे ॥ रंग ॥ घइन घजावे अनेंग
 छाल ॥ रंग ॥ २ ॥ पिचकारी ठांटे पीय ॥ रंग ॥
 जरी जरी केसर नीर छाल ॥ रंग ॥ मानुं मदन
 करती ठटा ॥ रंग ॥ अलवे लडावे अंधीर छाल
 ॥ रंग ॥ ३ ॥ योवन मद मदिरा ठाकी ॥ रंग ॥
 गावत प्रेम धमाली छाल ॥ रंग ॥ रावत मावत
 नाचती ॥ रंग ॥ कौतुकसुं करे आली छाल ॥ रंग ॥
 ॥ ४ ॥ सोहे मुख संघोखसुं ॥ रंग ॥ मानु संघ्यायुन
 चंद छाल ॥ रंग ॥ पूरित केसर फुल्लेखसुं ॥ रंग ॥
 फरत मेह जुं बुंद छाल ॥ रंग ॥ ५ ॥ यण जुज
 भूल देखावती ॥ रंग ॥ वाह सगावत कंठ छाल
 ॥ रंग ॥ फहे देवर परनो पीया ॥ रंग ॥ परना-
 धिन पुरुष ललंत छाल ॥ रंग ॥ ६ ॥ खूब मिखित
 रहे बेलीसुं ॥ रंग ॥ सागर गंगा रंग छाल ॥ रंग ॥
 जान ठगाने अजानवें ॥ रंग ॥ किठं न करो त्रिया

ਜੇਕਰ ਕਾਮ ਕਰਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਹੈ ।
 ਜੇਕਰ ਕਾਮ ਕਰਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਹੈ ।
 ਜੇਕਰ ਕਾਮ ਕਰਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਹੈ ।
 ਜੇਕਰ ਕਾਮ ਕਰਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਹੈ ।

जु कंचन देहा ॥ हरीहर ब्रह्म पुरंदरा, तुज आंगें
 केहा ॥ अजीत० ॥ १ ॥ तुंही अगोचर को नहीं, सज्जन
 गुन रेहा ॥ चाहे ताकुं चाहियें, धरी धर्म सनेहा ॥
 अजीत० ॥ ३ ॥ जक्ति बछल जग तारनो, तुं वि-
 रुद बदेहा ॥ वीतराग हुए वालहा ॥ क्युं कर्म
 री ठेहा ॥ अजीत० ॥ ४ ॥ जे जिनवर हे जर-
 तमें, परावत विदेहा ॥ जस कहे तुज पद प्रणमतें,
 सब प्रणमे तेहा ॥ अजीत० ॥ ५ ॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ संजव जिन जब नयन मिछ्यो
 हो ॥ टेक ॥ प्रगटे पूरव पुण्यके अंकुर, तबतें
 दिन मोहि सफल बढ्यो हो ॥ संजव० ॥ १ ॥ अं-
 गनमें अमियें मेह बूठे, जन्म तापको व्याप गढ्यो
 हो ॥ जैसी जक्ति तैसी प्रभु करुना, श्वेत संखमें
 दुध मिछ्यो हो ॥ संजव० ॥ २ ॥ करत फि-
 रत हे दुरह। दीक्षतें, मोह मल्ल जिणे जगत्रय
 ठढ्यो हो ॥ समकित रनन खेदु दरिसणतें, अथ न
 जाऊं कुगति रख्यो हो ॥ संजव० ॥ ३ ॥ नेह नजर
 जर निरखतही मुऊ, प्रभुसुं हियडो हेज दृष्ट्यो

पर पर परखतहि जया, जैसा हीरा जाचाहो ॥ ओर
 देव सवि परहस्या, में जाणी काचाहो ॥ सुमति० ॥
 ॥ १ ॥ तेसी किरिया हे खरी, जैसी तुज वाचाहो ॥
 ओर देव सवि मोहें जस्या, सवि मिथ्या माचाहो
 ॥ सुमति० ॥ २ ॥ चउरासी लखवेपमां, हुं बहु पर
 नाचाहो ॥ मुगति दान देइ साहिवा, अथ करहो
 जंचाहो ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ लागी अग्नि कपायकी,
 सब ठौरही आचाहो ॥ रक्षक जाणी आदस्या, में
 तुम शरन माचाहो ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ पक्षपात
 नहिं कोउसुं, नहिं लाखचलांचाहो ॥ श्रीनयविजयसु-
 शिष्यको, तोसुं दिख राचाहो ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सुडतालीशमुं ॥

॥ राग पूरबी ॥ घनि घनि सांजरे सांइ तखूना,
 घनि घनि० ॥ टेक ॥ पद्म प्रभु जिन दिलसैं न वि-
 सरे, मानु कियो कबु गुनको दूना ॥ दरसन देख-
 तही सुख पाउं, तो चिन होतहुं उजा कूना ॥ घ-
 नि० ॥ १ ॥ प्रभुगुन ज्ञान ध्यान विधि रचना, पान
 सुपारी काथा चूना ॥ राग जयो दिलमें आयोगें,
 रहे ठिपाया ठाना दूना ॥ घनि० ॥ २ ॥ प्रभुगुन

चित्त बांध्यो सय साथे, कुन पेसे खेइ घर सूना ॥
 राग जग्या प्रजुमुं मोहि परगट, कटो नया कोऊ
 कटो जूना ॥ धरि० ॥ ३ ॥ लोक लाजसैं जो चित
 धोरे, सोतो सदज विवेकही सूना ॥ प्रजुगुन ध्या-
 न विगर भ्रम जूला, करे किरिया सो राने सूना ॥
 धरि० ॥ ४ ॥ मंतो नेह कियो तोहि साथे, अघ
 निवाह तोतो बहू हूना ॥ जस कहे तो दिन थोरन
 सेवुं, अमिय खाइ कुन चाखे लूना ॥ धरि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥

॥ राग इमन कथ्याण ॥ ऐसे सामी सुपार्श्वसैं
 दिल लगा, दुःखजगा सुख जगा जगतारणा ॥ रा-
 जहंसकुं मानसरोवर, रेवा जख ज्युं वारणा ॥
 ऐसे० ॥ १ ॥ टेक ॥ मोरकुं मेह चकोरकुं चंदा, मधु
 मनमयी चित्त ठारना ॥ फूल अमूल जमरकी अं-
 वही, कोकिलकुं सुखकारना ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ सीता-
 कुं राम काम ज्युं रतिकुं, पंथीकुं घर वारना ॥ दानी
 कुं त्याग पाग बहानकुं, योगीकुं संयम धारना ॥
 ऐसे० ॥ ३ ॥ नंदनवन ज्युं सुरकुं बल्लभ, न्यायीकुं
 न्याय निहारना ॥ तुं मेरे मन तुंहि सुहायो, ओर

तो चिततें उतारनां ॥ ऐसे० ॥४॥ श्रीसुपार्श्व दरिशन
न पर तेरे, कीजें कोमी उवारना ॥ श्री नय विजय विबु-
ध सेवककुं, दियो समता रस पारना ॥ ऐसे० ॥५॥ इति ॥

॥ पद ओगणपचाशमुं ॥

॥ राग रामग्री ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञ जिनराज राजे,
वदन पूनमचंदरे ॥ जविक लोक चकोर निरखत,
लहे परमानंदरे ॥ श्रीचंद्र० ॥ १ ॥ टेक ॥ महमद्दे
महिमाएं जसजर, सरस जस अरविंदरे ॥ रण
ऊणे कविजन जमर रशिया, लहि सुख मकरंदरे
॥ श्री चंद्र० ॥ २ ॥ जस नामे दोखत अधिक दिये,
टले दोहग दंदरे ॥ जस गुन कथा जव व्यथा जां-
जे, ध्यान शिवतरु कंदरे ॥ श्री चंद्र० ॥ ३ ॥ विपुल
हृदय विशाल जुजयुग, चखित चाल गयंदरे ॥ अ-
तुल्य अतिशय महिमा मंदिर, प्रणत सुरनर वृंदरे ॥
श्री चंद्र० ॥ ४ ॥ में दास चाकर प्रनु तेरो, शीष्य
तुज फरजंदरे ॥ जसविजय वाचक इम विनये, टाखो
मुज जव फंदरे ॥ श्री चंद्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पचाशमुं ॥

॥ राग केदारो ॥ में कीनो नहीं तो दिन थोर

सुं राग ॥ देक ॥ दिनदिन वान चढे गुन तेरो, ज्युं
 कंचन परजाग ॥ थोरनमें हे कपायकी कखिका,
 सो क्युं सेवा लाग ॥ में कीनो० ॥ १ ॥ राजहंस तुं मा-
 नसरोवर, थोर अशुचि रुचि काग ॥ विषय जु-
 जंगम गरुड तुं कहियें, थोर विषय विपनाग ॥ में
 कीनो० ॥ २ ॥ थोर देव जस ठीखर सरिखे, तुं तो
 समुद्र अधाग ॥ तुं सुरतरु जग वंठित पूरन, थोर
 तो सुको साग ॥ में कीनो० ॥ ३ ॥ तु पुरुषोत्तम
 तुंहि निरंजन, तुं शंकर घडजाग ॥ तुं प्रह्ला तुं बु-
 ङ्गि महाबल, तुंहि देव धीतराग ॥ में कीनो० ॥ ४ ॥
 सुविधिनाथ तुज गुन फूलनको, मेरो दिस देधाग ॥
 जस कहै जमर रसिक होइ तामें, लीजें जक्ति
 पराग ॥ में कीनो० ॥ ५ ॥

॥ पद एकावनमुं ॥

॥ राग फागनी देशी ॥ चउ कसाय पाताल कख
 श जिहां, तृष्णा पवन प्रचंरु ॥ घहु विकल्प कखो-
 ख चढतुहे, थारति फेन उदंड ॥ १ ॥ प्रवसायर
 जीपण तारीए हो, थदो मेरे खखना ॥ पासजी
 त्रिजुवन नाथ दिसमें, ए विनति धारियें हो ॥ थ० ॥

॥ २ ॥ जरत उदाम काम बडवानस, परत सें
 गिरी शृंग ॥ फिरत व्यसन बहु मगर तिमिंगस,
 करतहे निमग उमंग ॥ अ० ॥ ३ ॥ जमरी पाके
 घिच जयंकर, उखटी गुलटी वाच ॥ करत प्रभाव
 पिशाच सहित जिहां, अघिरति व्यंतरी नाच ॥
 अ० ॥ ॥ ॥ गर्जत अरति फुरति रति विजुरी, होत
 पद्मोत तोफान ॥ लागतियोरेकुं गुरु मझगारी,
 धरम जिहाज निदान ॥ अ० ॥ ५ ॥ जुरई पाडे प
 जिठ अनि जोरी, सहस अठार शीलंग ॥ धरम
 जिहाज तिठ सज करी चखवो, जस कहे शिव
 पुर चंग ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद वाचनमुं ॥

॥ दुख दसियां मुख दीवें हां मुज सुख उपनारे,
 नेट्यो नेट्यो बीर जिणंदरे ॥ हवे मुज मनमंदिर
 मां प्रनु आर्वी वसारे, प. पुं पामुं परमानंदरे ॥ दु० ॥
 ॥ १ ॥ पाले बंध इहां कीधो ममकीन बजनोरे, काट्यो
 काट्यो कचरो नें धांतिरे ॥ इहां अति उंचा गांहे ना-
 गिध नंदुथारे, रुई रुई मंजर नांतिरे ॥ दु० ॥
 ॥ २ ॥ कर्म विवर गांवे इहा मोनि जुमकारे, जुझे

॥ २ ॥ जरत उदाम काम बडवानस, परत सेह
 गिरी शृंग ॥ फिरत व्यसन बहु मगर तिमिंगल
 करतहे निमग उमंग ॥ अ० ॥ ३ ॥ जमरी याके
 धिच जयंकर, उलटी गुलटी वाच ॥ करत प्रमाव
 पिशाच सहित जिहां, अविरति व्यंतरी नाच ॥
 अ० ॥ ४ ॥ गर्जत अरति फुरति रति विजुरी, होत
 बहोत तोफान ॥ लागतियोरकुं गुरु मलबारी,
 धरम जिहाज निदान ॥ अ० ॥ ५ ॥ जुरई पाटे ए
 जिउ अति जोरी, सहस अठार शीखंग ॥ धरम
 जिहाज तिउ सज करी चलवो, जस कहे शिव
 पुर चंग ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥ दुख टलियां मुख दीठे हो मुज सुख उपनोरे,
 जेठ्यो जेठ्यो धीर जिणंदरे ॥ हवे मुज मनमंदिर
 मां प्रभु आवी वसोरे, पातुं पामुं परमानंदरे ॥ दु० ॥
 ॥ १ ॥ पीठ बंध इहां कीधो समकीत वजनोरे, काढ्यो
 काढ्यो कचरो नें भ्रांतिरे ॥ इहां अति उंचा सोहे चा-
 रित्र चंडुआरे, रूडी रूडी संवर जांतिरे ॥ दु० ॥
 ॥ २ ॥ कर्म विवर गोखे इहा मोति जुमकारे, जुसे

जुझे धीगुण थावरे ॥ पार जावना पंचाली अचरय
करेरे, फोरी कोरी कोरणी काठरे ॥ दु० ॥ ३ ॥ इहां
आवी समता राणीसुं प्रचुरमोरे, सारि सारि धिरता
सेजरे ॥ किम जइ शकशो एकवार जो थावशोरे,
रंज्या रंज्या हियमानी हेजरे ॥ दु० ॥ ४ ॥ वय-
ज थरज सुनी प्रचु मनमंदिर आवियारे, आपे
तुग तुग त्रिभुवन जाणरे ॥ श्री नयविजय विबुध
पय सेवक जणरे, तेणे पाम्या पाम्या कोनि कट्या-
णरे ॥ दु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रेपनसुं ॥

॥ सज्जन राखत रीतिजली, विनु कारन उपकारी
उत्तम, जाइ सहज मिश्रि ॥ दुर्जनकी मन परि-
नति काली, जैसी होय गली ॥ स० ॥ १ ॥ ओरन-
को देखत गुन जगमें, दुर्जन जाये जली ॥ फल
पावे गुन गुनको ज्ञाता, सज्जन हेज हली ॥ स० ॥
॥ २ ॥ जंच इति पद वेगो दुर्जन, जाइ नाहिं घ-
ली ॥ उपगृह उपर वेगी मीनी, होत नहिं उजली ॥
स० ॥ ३ ॥ विनय विवेक विचारत सज्जन, जइ
कजाव जली ॥ दोष लेश जो देखे कबहुं, चाखे

चतुर टली ॥ स० ॥ ४ ॥ अब मैं ऐसो सज्जन पायो,
उनकी रीत जली ॥ श्रीनयविजय सुगुरु सेवातें,
सुख रस रंग रली ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चौपनमुं ॥

॥ आज आनंद जयो, प्रभुको दर्शन लह्यो, रोम
रोम सितल जयो, प्रभु चित्त आयो हे ॥ आ० ॥ मन
हुंते धाव्या तोहे, चलके आयो मन मोहे, चरण
कमल तेरो, मनमें ठहरायो हे ॥ आ० ॥ १ ॥ अ-
कल अरूपी तुंही, अकल अमूरति योहीं, निरख
निरख तेरो, सुमतिशुं मिलायो हे ॥ आ० ॥ २ ॥ सुम-
ति स्वरूप तेरो, रंग जयो एक अनेरो, वाइ रंग आ-
त्म प्रदेशो, सुजस रंगायो हे ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंचावनमुं ॥

॥ ज्ञानादिक गुण तेरो, अनंत अपर अनेरो ॥
बाही कीरत सुन मेरो, चित्तहुं जस गायो हे ॥
ज्ञान० ॥ १ ॥ तेरो ग्यान तेरो ध्यान, तेरो नाम मेरो
प्रान, कारण कारज सिद्धो, ध्याताध्येय ठहरायो हे
॥ ज्ञान० ॥ २ ॥ वृट गयो भ्रम मेरो, दर्शन पायो मैं
तेरो ॥ चरण कमल तेरो, सुजस रंगायो हे ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥

॥ पद ठप्पनमुं ॥

॥ वाद वादीसर ताजे, गुरु मेरो गछ राजे, पंच
महावत जहाज, सुधर्मा ज्युं सवायो हे ॥ वा० ॥
॥ १ ॥ विघ्याको बडो प्रतापसंग, जख ज्युं उठत
तुरंग, निरमल जेसो संग, समुद्र कहायो हे ॥
वा० ॥ २ ॥ सत्तसमुद्र जख्यो, धरम पोत तामे
तख्यो, शीख सुखान बाखम, हमाखंगर काख्यो हे ॥
वा० ॥ ३ ॥ सहक संतोष करी, तपतो तपी ह्या ज-
री, ध्यान रंजक देत धरी, मोला ग्यान चलायो हे ॥
वा० ॥ ४ ॥ एसो जहाज क्रियाकाज, मुनिराज
सजो साज, दया मया मणि भाणिक, ताहिमें जरा-
यो हे ॥ वा० ॥ ५ ॥ पुण्य पवन आयो, सुजस ज-
हाज चलायो, प्राणजीवन एसो माल, घर बैठे पा-
यो हे ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥

॥ परी आज आनंद जयो मेरे तेरो, मुख निरख
निरख रोम रोम शीतल जयो थंगोथंग ॥ ए० ॥
सुख समजल समता रस जीखत, आनंद रंग ज-
यो अनंतरंग ॥ ए० ॥ १ ॥ एसी आनंद दशा प्र-

गटी चित्त, अंतर ताको प्रभाव चलत, निरमख
गंगवाही गंग ॥ समता दोठ मिल रहे, जस विजय
जीलत ताके संग ॥ प० ॥ २ ॥

॥ पद अछावनमुं ॥

॥ जो जो देखे वीतरागने, सो सो होशे वीरा-
रे ॥ धिन देखे होसे नहीं कोइ, कांइ होए अधी-
रा रे ॥ जो० ॥ १ ॥ समय एक धनहीं घटसी, जो
सुख दुःखकी पीनारे ॥ तुं क्युं सोच करे मन कू-
का, होवे वज्र जो हीरारे ॥ जो० ॥ २ ॥ लगे न
तीर कमान धान क्युं, मारी सके नहीं मिरारे ॥ तुं
संजार पुरुष बल अपनो, सुख अनंत तो पीरारे ॥
जो० ॥ ३ ॥ नयन ध्यान धरो वा प्रभुको, जो टारे
जब जीरारे ॥ सजसचेतन धरम निज अपनो, जो
तारे जब तीरारे ॥ जो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणसाठमुं ॥

॥ जजन विनुं जीवित जेसे प्रेत, मखिन मंदम-
ति डोलत घर घर, उदर जरनके हेत ॥ ज० ॥ १ ॥
दुर्मुख वचन वकत नित निंदा, सज्जन सकल दुःख
देत ॥ कबहुं पापको पावत पैसो, गाढे धुरीमे देत ॥

ए० ॥ १ ॥ ता सुख ग्रहवेकुं मुनि मन खोजत, मन
मंजन कर ध्यायो ॥ मनमंजरी जइ, प्रफुल्लित द-
सा लइ, तापर जमर खोजायो ॥ ए० ॥ २ ॥ जमर अ-
नुजय जयो, प्रजुगुन वास लखो ॥ चरन करन तेरो,
थलल लखायो ॥ एसी दशा होत जय, परम पुरुष
तय, पकरत पास पढायो ॥ ए० ॥ ३ ॥ तय सुजस
जयो, अंतरंग आनंद लखो, रोम रोम सीतल ज-
यो, परमात्म पायो ॥ अकल स्वरूप जूप, कोऊ न
परखत कूप, सुजस प्रभु चित आयो ॥ ए० ॥ ४ ॥

॥ पद वामठभुं ॥

॥ राग ध्रुपद ॥ कैसे देत कर्मनकुं दोस, मन नि-
वहे घेहे थापु कानो ॥ ग्रहे राग अरु दोष ॥ के० ॥
विययके रस थाप जूखो, पाप सो तन ठोस ॥ के० ॥ १ ॥
देवधर्म गुरुकी करी निंदा, मिथ्यामतके जोस ॥ के०
॥ २ ॥ फल ठदय नइ नरक पदवी, नजोगे केको
संग ॥ के० ॥ ३ ॥ किए थापुं कर्म जुगते, थव कहा
करो सोस ॥ के० ॥ ४ ॥ दुःख नो यहु कास पीयो, लहे
न मुख जस थोम ॥ के० ॥ ५ ॥ क्रोध मान माया
सोज, जखो तन घट ठोस ॥ के० ॥ ६ ॥ चेत चेतन

पय मुजस, मुगति पंथसो पोस ॥ के० ॥ ७ इति ॥

॥ पद त्रेसठमुं ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ तुहारे शिर राजत थ-
जव जटा, ठारये मानुं गयख न ठारत ॥ सीत स-
णगार ठटा ॥ तुहारे० ॥ १ ॥ किधुं गंगा थमरीस
सुर सेवत, यमुना उजय तटा ॥ गिरिवर सिखरें
एह थनोपम, उल्लत मेघ घटा ॥ तु० ॥ २ ॥ कैसे
वाल छगे जयि जवजख, तारत थति विकटा ॥ ह-
रि कहे जस प्रजु रूपन रखो प, हमहिं थति उ-
खटा ॥ तु० ॥ ३ ॥

॥ पद चोसठमुं ॥

॥ राग बिहाग ॥ माया कारमीरे, माया म करा
चतुर सुजाण ॥ माया वायो जगत वसुधो, दुःखीयो
पाय थजान ॥ जे नर मायायें मोहि रखो, तेने सु-
नै नही सुख ठाम ॥ माया० ॥ १ ॥ न्दाना मोटा
नरखी माया, नारीने थधकेरी ॥ बली विशेषें
थधिकी माया, गरहाने जाजेरी ॥ माया० ॥ २ ॥ माया
कामण माया मोहन, माया जग भूतारी ॥ मायाथी
मन सहुनुं चलीयुं, खोजीने धहु प्यारी ॥ माया० ॥

ठोके, दीयो वंठित सेवक करठके ॥ सा० ॥ अखय
 खजानो तुज नवी खूटे, हाथा थकी तोसुं नवी वूटे
 ॥ सा० ॥ ३ ॥ जो खिजमतमां खामी दाखो, तो
 पण निज जाणी हित राखो ॥ सा० ॥ जेणे दीर्घ
 ठे तेहज देशे, सेवा करशे ते फल लेशे ॥ सा० ॥ ४ ॥
 धेनु कूप आराम स्वजावे, देतां देतां संपत्ती पावे ।
 सा० ॥ तिम मुजने तमो जो गुण देशे, तो जगमां जस
 अधिक बहेशे ॥ सा० ॥ ५ ॥ अधिकुं ओतुं किशुं
 रे कहावो, जिमतिम सेवक चित्त मनावो ॥ सा० ॥
 माग्या विण तो माय न पिरसे, ए उखाणो साचो
 दिसे ॥ सा० ॥ ६ ॥ इम जाणीने विनती कीजें,
 मोहनगारा मुजरो लीजें ॥ सा० ॥ वाचक जस
 कहे खमियें आसंगो, दियो शिव सुख धरी अवि-
 हड रंगो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति

॥ पद सडसठमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ चेतन मोहको संग निवारो,
 ग्यान सुधारस धारो ॥ चे० ॥ १ ॥ मोह महातम मल
 दूरेरे, धरे सुमति परकास ॥ मुक्ति पंथ परगट करेरे,
 दीपक ज्ञान विस्वास ॥ चे० ॥ २ ॥ ज्ञानी ज्ञान म-

गन रहेरे, रागादिक मल खोय ॥ चित्त उदास क-
 रनी करेरे, कर्मबंध नहिं होय ॥ चे० ॥ ३ ॥ स्त्रीन जयो
 व्यवहारमें रे, युक्ति न उपजे कोय ॥ दीन जयो प्रजु
 पद जपेरे, मुगति कहांसुं होय ॥ चे० ॥ ४ ॥ प्रजु
 समरो पूजो पदोरे, करो वीविध व्यवहार ॥ मोक्ष
 स्वरूपी आत्मारे, ग्यान गमन निरधार ॥ चे० ॥
 ॥ ५ ॥ ज्ञान कला घट घट वसेरे, जोग जुगतिके
 पार ॥ निज निज कला उद्योत करेरे, मुगति होय
 संसार ॥ चे० ॥ ६ ॥ बहु विध क्रिया कलेससुं रे,
 शिव पद न लहे कोय ॥ ग्यान कला परगाससां रे, स-
 हज मोक्ष पद होय ॥ चे० ॥ ७ ॥ अनुजब चिंताम-
 णि रतनरे, जाके दृष्ट परकास ॥ सो पुनीत शिव
 पद लहेरे, दहे चतुर्गनिवास ॥ चे० ॥ ८ ॥ महिमा
 सम्यक् ग्यानकीरे, अरुचि राग बल जोय ॥ क्रिया
 करत फल छुजतेरे, कर्म बंध नहिं होय ॥ चे० ॥ ९ ॥
 जेद ग्यान तयखों जखोरे, जवखों मुक्ति न होय ॥
 परम जोति परगट जिहारे, तिहां विकल्प नहिं को-
 य ॥ चे० ॥ १० ॥ जेद ग्यान साबू जयोरे, समरस
 निर्मल नीर ॥ धोवी अंतर आत्मारे, धोवे निज गुण
 चीर ॥ चे० ॥ ११ ॥ राग विरोध विमोह मलीरे, ए-

ही आश्रव मूल ॥ एही करम बढायकैरे, करे धर्मकी
 जूल ॥ चे० ॥ १२ ॥ ग्यान सरूपी आतमारै, करे ग्या-
 न नहिं थोर ॥ अव्यकर्म चेतन करे रे, एह व्यवहा-
 रकी दोर ॥ चे० ॥ १३ ॥ करतां परणामी अव्य रे,
 कर्मरूप परिणाम ॥ किरिया परजयकी फिरतरे, वस्तु
 एकत्रय नाम ॥ चे० ॥ १४ ॥ करता कर्म क्रिया करेरे,
 क्रिया करम करतार ॥ नाम जेद बहुविध जायेरे, व-
 स्तु एक निर्धार ॥ चे० ॥ १५ ॥ एक कर्म कर्तव्य-
 तारे, करे न करता दोय ॥ तेसैं जस सत्ता सधिरे,
 एक जावको होय ॥ चे० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ पद अडसठमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ जबलग उपसमनांहिं रति,
 तब लगे जोग धरे क्युं होवे, नाम धरावे जति ॥
 जव० ॥ १ ॥ कपट करे तुं बहु विध जातैं, क्रोधे जलैं
 ठति ॥ ताको फल तुं क्या पावेगो, ग्यान बिना नां-
 हिं वती ॥ जव० ॥ २ ॥ जूल तरस थोर धूप सहतु
 हे, कहे तु मझ वति ॥ कपट केसवे माया मंके, म-
 नमें धरे व्यकती ॥ जव० ॥ ३ ॥ जसम खगावत ठा-
 दो रहेवत, कहत हे हुं वसति ॥ जंत्र मंत्र जमी

घूटी जेखज, खोजवश मूढ मति ॥ जव० ॥ ४ ॥ घडे
 घडे घट्टु पूर्वधारी, जिनमें सकि हति ॥ सोजी उप-
 सम ठोमी वीचारे, पाये नरक गति ॥ जव० ॥ ५ ॥
 कोठ गृहस्थ कोठ होवे बेरागी, जोगी जगत जति ॥
 अघ्यात्म जावें उदासी रद्देगो, पावेगो तयही मुग-
 ति ॥ जव० ॥ ६ ॥ श्री नय विजय विबुध वर राजे,
 जाने जग कीरति ॥ श्री जसविजय उवद्याय पसार्ये,
 हेम प्रभु सुख संतति ॥ जव० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पद अगणोत्तरमुं ॥

॥ राग रामघी ॥ चंद्रप्रभु जिनराज राजे, वदन
 पूनम चंदरे ॥ जविक लोक चकोर निरखत, लहे पर-
 मानंदरे ॥ चं० ॥ १ ॥ महमहे महिमायें जमर,
 रस जस अरविंदरे ॥ रणकणे जविजन प्रसर र-
 सिया, लहि सुख मकरंद रे ॥ चं० ॥ २ ॥ जस नामें
 दोलत अधिक दीपे, टखे दोहग दंदरे ॥ जसगुण
 कथा जवज्यथा जाजें, ध्यान शिवतरु कंद रे ॥ चं० ॥
 ॥ ३ ॥ विपुल हृदय विशाल भुजयुग, चलत चाल
 गयंदरे ॥ अतुल अतिसय महिमा मंदिर, प्रणत
 सुरनर धंदरे ॥ चं० ॥ ४ ॥ हुं दास धाकर देव तोरो,

सिस तुज फरजंदरे ॥ जसविजय वाचक एम वि-
नवे, टाल मुज जव फंद रे ॥ चंद्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सित्तेरमुं ॥

॥ राग काफी ॥ तो बिना ओर न जाचुं जिनं-
दराय ॥ तो० ॥ टेक ॥ में मेरो मन निश्चय किनो,
एहमां कतु नहिं काचुं ॥ जिनंदराय ॥ तो० ॥ १ ॥
तम चरन कमलपर पंकज मन मेरो, अनुजव रस
जर चाखुं ॥ अंतरंग अमृत रस चाखो, एह वचन
मन साचुं ॥ जी० ॥ तो० ॥ २ ॥ जस प्रभु ध्यायो
महारस पायो, अवर रसें नहिं राचुं ॥ अंतरंग फ
रस्यो दरसन तेरो, तुज गुण रस रंग माचुं ॥ जी०
॥ तो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद इकोतेरमुं ॥

॥ राग प्रजाती ॥ दृष्टि रागें नवि लागियें, बली
जागियें चित्तें ॥ मागियें शिख झानी तणी, हठ
जांगीएं नित्यें ॥ दृष्टि० ॥ १ ॥ जे ठना दोष देखे
नहिं, जिहां जिहां अनि रागी ॥ दोष अठता पण
दाखवे, जिहांथी रुचि जांगी ॥ दृ० ॥ २ ॥ दृष्टि
राग चले चित्तथी, फरे नेत्र विकराखें ॥ पूर्व उप-

कार न सांजखे, पडे अधिक जंजाखे ॥ द० ॥ ३ ॥
 वीर जिन जव हुता विचरता, तव मंखली पूतो ॥
 जिन करी जड जनें आदख्यो, इहां मोह अति धू-
 तो ॥ द० ॥ ४ ॥ कृष्ण जंडार रमणी तजी, जजी
 थाप मति रागो ॥ दृष्टि रागें जमाली लख्यो, नवि
 जवजख तागो ॥ द० ॥ ५ ॥ बली आचार्य सावद्य
 जे, हुथ्यो अनंत संसारो ॥ दृष्टि राग स्वमति पणे
 थयो, महानिशीथ विचारो ॥ द० ॥ ६ ॥ हुवे जि-
 न धर्म आशातना, अजाण्युं कहे रंगें ॥ मंरु आ-
 गलें जिनवरें, बंदियो जगवइ थंगें ॥ द० ॥ ७ ॥
 ग्रामना नटने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो जोगो ॥ दृ-
 ष्टिराग मिल्यो तेहवो, कथक सेवक छोगो ॥ द० ॥
 ॥ ८ ॥ थापण गोठडी मीठमी, हवीने मन लागे ॥
 झानी गुरु वचन रखियामणां, कटुक तीरस्यां वागे ॥
 द० ॥ ९ ॥ दृष्टिरागें भ्रम उपजे, वधे ज्ञान गुण रा-
 गें ॥ एहुमां एकतुमें आदरो, जखो होय जे आगें ॥
 द० ॥ १० ॥ दृष्टि रागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु
 अनुसरजो ॥ वाचक जसविजय कहे, हित शिख
 मन धरजो ॥ द० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ पद बढ़ोतेरमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ जब खगें समता कणु नाह
 आवे, जबखगें क्रोध व्यापक हे अंतर, तबखगें जो
 ग न सोहावे ॥ ज० ॥ १ ॥ बाह्य क्रिया करे कष्ट
 केलवे, फिरके महंत कहावे ॥ पक्षपात कबहु नहिं
 छोडे, उनकुं कुगति घोखावे ॥ ज० ॥ २ ॥ जिन
 जोगीने क्रोध किहांतें, उनकुं सुगुरु बतावे ॥ नाम
 धारक जिन जिन बतावे ॥ उपसम विनु दुःख
 पावे ॥ ज० ॥ ३ ॥ क्रोध करी खंधक आचारज, हु
 ओ अमिकुमार ॥ दंडकी नृपनो देश प्रजाह्यो, ज
 मियो जब मोजार ॥ ज० ॥ ४ ॥ संव प्रद्युम्न कुमार
 संताप्यो, कष्ट दीपायन पाय ॥ क्रोध करी तपनो फल
 हाखो, कीधो छारकां दाय ॥ ज० ॥ ५ ॥ काजस्त-
 गमां चढ्यो अति क्रोध, प्रसन्न चंद्र रुपिराय ॥
 सातमी नरक तणां दस मेली, कडवां तेन खमाय ॥
 ज० ॥ ६ ॥ पार्श्वनायने उपसर्ग कीधो, कमठ जवं-
 तर धीठ ॥ नरक तिर्यचनां दुःख पामी, क्रोध तणां
 फल दीठ ॥ ज० ॥ ७ ॥ एम अनेक साधु पूर्वधर,
 तपिया तप करी जेह ॥ कारज पके पण ते नवि

टकिया, क्रोध तणुं बख एह ॥ ज० ॥ ७ ॥ समता
 जाव बली जे मुनि बरिया, तेहनो धन्य श्रवतार ॥
 खंधक श्रुपिनी खाख उतारी, उपसमें उताख्यो पार ॥
 ज० ॥ ८ ॥ चंडरुद्र आचारज चखतां, मस्तक
 दीया प्रहार ॥ समता करतां केवल पाम्यो, नव-
 दीक्षित अणगार ॥ ज० ॥ १० ॥ सागरचंदनुं शीश
 प्रजाद्वयुं, नीसजसेन नरेंद्र ॥ सुमता जाव धरी सु-
 रलोकें, पोतो परम आनंद ॥ ज० ॥ ११ ॥ खेमा कर-
 तां खरच न लागे, जांगे कोड कखेस ॥ अरिहंत देव
 आराधक थाये, बाधे सुजस प्रवेश ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ पद तर्होतेरमुं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ प्रभु मेरे तुं सब बातें पूरा, पर-
 की आश कहा करे प्रीतम, ए किण बातें अधूरा ॥
 प्रभु० ॥ १ ॥ परबश बसत खहन परतदा दुःख,
 सबहीं घासैं सनूरा ॥ निजघर आप संचार संपदा,
 मत मन होय सनूरा ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ परसंग त्याग लाग
 निजरंगें, आनंद बेली अंकूरा ॥ निज अनुजवरस
 लागे मीठा, ज्युं घेवर में दूरा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अपने
 ख्याल पलकमें खेले, करे शत्रुका चूरा ॥ सहजानंद

अचल सुख पावे, धूरे जगजस नूरा ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद चम्पूतेरमुं ॥

॥ अथ श्री पूजाविधिनुं पार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ शास्त्रिजद्र जोगी रह्यो ॥ ए देशी ॥

पूजाविध मांहे जावियेंजी, अंतरंग जे जाव ॥
 ते सवि तुज आगल कहुंजी, साहेब सरल स्वजाव ॥
 सुहंकर अवधारो प्रभुपास ॥ ए आंकणी ॥ दातण
 करतां जाविएंजी, प्रभुगुण जल मुख सुद्ध ॥ जल
 उतारी प्रमत्तनाजी, हो मुज निर्मल बुद्ध ॥ सु० ॥
 ॥ १ ॥ जतनायें स्नानें करीजी, काढो मेल मिथ्या-
 त ॥ अंगुठो अंग शोपवीजी, जाणो हुं अवदात ॥
 सु० ॥ ३ ॥ क्षीरोदकनां धोतियांजी, चित्तयो चित्त
 संतोष ॥ अष्टकर्म संवर नखोजी, आठपडां मुहको-
 श ॥ सु० ॥ ४ ॥ ओरशीयो एकाग्रताजी, केसर न-
 क्ति कटखोल ॥ श्रद्धा चंदन चिंतवांजी, ध्यान घोल
 रंग रोल ॥ सु० ॥ ५ ॥ नास बहूं आणा नक्षीजी,
 तिलकनखो तेह जाव ॥ जे आचरण उतारीयेंजी,
 ते उतारो मित्र जाव ॥ सु० ॥ ६ ॥ जे निर्मल उतारि-
 येंजी, ते तो जिन नपाय पनाय नपायं चिंतवोजी.

तेह पुरुष धन धन ॥ सु० ॥ १६ ॥ परम पुरुष
सामलाजी, मानो ए मुज सेव ॥ दूर करो जव
लोजी, वाचक जस कहै देव ॥ सु० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ पद पंचोत्तरमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ संजव जिन नयन नि
प्रगटे पुण्यके अंकूर ॥ ए आंकणी ॥ तवयें दिन
ही सफस बढ्यो हे ॥ अंगणे अमीयें मेह बुग
जनम तापको व्याप गढ्यो हे ॥ संज० ॥ १ ॥ जे
सी जक्ति तैसी प्रजु करुना, स्वेत संखमें दूध मि
ढ्यो हे ॥ दर्शनयें नवनिधि रिधि पाइ, दुःख दोह
सय दूर टढ्यो हे ॥ संज० ॥ २ ॥ करत फिरत हे
दूरहिं दितयें, मोहमदस जिणे जगत्र नढ्यो हे
समकित रत्न सहुं दरिसनसैं, अब नवि जाउं कुगति
रढ्यो हे ॥ संज० ॥ ३ ॥ नेह नजर जर निरखन
हीं मुज, प्रजुसुं हैयडो हेज हढ्यो हे ॥ श्री
जय विबुध सेवककुं, साहेब सुरतरु होय फढ्यो हे
॥ संज० ॥ ४ ॥ इति ॥

मकरो जोर ॥ जिउ ॥ ४ ॥ रतन तीन दीजें राजु
 लकुं, जयो रंगरस ऊकही जोर ॥ विनय सदा सेव
 हु सुखदाइ, समुदराउ शिवा देवी कितोर ॥ जि-
 उ ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद दशमुं ॥

॥ राग जेजेवंती ॥ अजहुं कहालों प्यारे, रहोगे
 हमसुं न्यारे, बाहितो धुतारि प्यारि, तुम चित्त जा-
 इ हे ॥ १ ॥ बहुत विगोइ खोइ, इनही सकल गुन ॥
 लोगनमें शोभा तुम, जलि युं बढाइ हे ॥ २ ॥ ह-
 मकुं काहेकुं मानो, बाहिसो तिहारो तानो ॥ जानोगे
 आपहि बातो, जैसी दुःखदाइ हे ॥ ३ ॥ सवनकुं
 प्यारी नारी, माया हे जगतदारी ॥ इनसेतें यारी
 जारी, आखर बुराइ हे ॥ ४ ॥ जूठेहि दिखावे नेह,
 पाथरकी जैसी त्रेह ॥ ठटकी दाखेंगी ठेह, अंत तो
 पराइ हे ॥ ५ ॥ कहे ज्ञान कखा जिउ, जानो सो
 करहो पिउ, जैसी हे तैसी तो तुम, विनये सुनां-
 इ हे ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

राग विहागडो ॥ सांइ सबूनाकेसें पाऊरी, मन

धाउरे, मेरी गति समजों नाहिं ॥ केतेहीं ठोरे में
 प्यासे, केते उर गहे चांहि ॥ थिर० ॥ ३ ॥ सयन
 सनेह सकल हे चंचल, किसके सुत किसकी माइ ॥
 रितु बसंत शिर रूख पात ज्यों, जाय परोगे को कां-
 ही ॥ थिर० ॥ ४ ॥ अजरामर अकलंक अरूपी, स-
 ध लोगनकुं सुखदाइ ॥ विनय कहे जब दुःख बं-
 धनतैं, ठोडनहार वे सांइ ॥ थिर० ॥ ५ ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग विहागडो ॥ मन न काहुके वश, मन
 कीए सब वश, मनकी सो गति जाने, याको मन व-
 श हे ॥ १ ॥ पढोहो बहुत पाठ, तप करो जे पाहार,
 मन वश कीए विनु, तप जप वशहे ॥ २ ॥ काहेकुं फी-
 रे हे मन, काहु न पावेगो चेन, विषयके उमंग रंग,
 कहु न फुरसहे ॥ ३ ॥ सोउ ज्ञानी सोउ ध्यानी,
 सोउ मेरे जीया यानी ॥ जिने मन वशकियो, बाहिको
 सुजश हे ॥ ४ ॥ विनय कहे सौ धनु, याको मनु विनु
 विनु, सांइ सांइ सांइ सांइ, सांइसैं तिरस हे ॥ ५ ॥ इति

॥ पद चौदमुं ॥

॥ राग श्रीराग ॥ अजब तमासा इक जात्या ॥

नमें मूंजी रह्यो मेरे लाल, इन विधि गया अनंत
 फाल ॥ अब सुहनेका ठोडो ख्याल, या सब फूटा
 मिथ्या जाल ॥ जागो० ॥ ३ ॥ या अषावन माया
 सेज, उसपर पिऊका इतना हेज ॥ सुकलध्यान प-
 खारो अंग, थुं प्रगटे तुम निर्मल रंग ॥ जागो० ॥ ४ ॥
 पिठ निरखो जिनराज दिनंद, कहे मति नारी मि-
 टे थुं निंद ॥ आप संचाखो खोली नेत, विनयकरी
 विनयो पिठ चेत ॥ जागो० ॥ ५ ॥

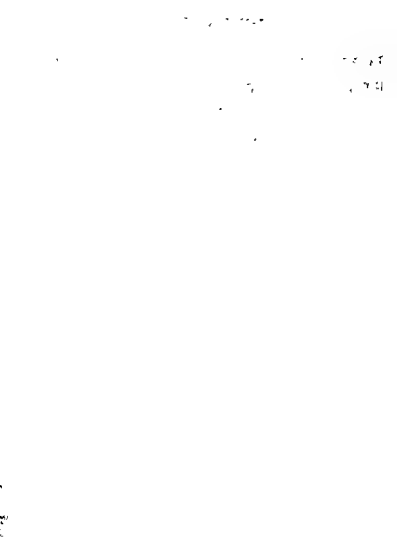
॥ पद शोलमुं ॥

॥ राग ॥ हुसेनी ॥ खुदाके बंदे बे सीर मत छ्यो बज
 गारी ॥ पदेशी ॥ सुन सुहागिन बे दिलकी बात ह-
 मारी ॥ टेक ॥ में सोदागर दूर बिदेशी, सोदाकर-
 ने आया ॥ देखत तोकुं झूखिगया सब, तोहिसुं
 चित्त लाया ॥ सुन० ॥ १ ॥ निस्सी वासर तेरे रस
 राता, अपने काम न बूके ॥ तेरे विरह दरदतें ड-
 रपूं, क्युं दुस्मनसें फूके ॥ सुन० ॥ २ ॥ सुंदरी तैं कलु
 कामन कीया, तुज बिनु पलक न जावे ॥ खोचन
 लागी रहे तेरी लासच, ऊर कलु न सोहावे ॥ सुन० ॥
 ॥ ३ ॥ अरथ गरथ सब तुजे लिखाया, दमरा ए-

विनती इतनी मानी बाखिम, बेपरवाही मत करे
 ॥ ४ ॥ तुं परदेशका बेलाख, पंथी ब्राह्मणा, प्रीतमें
 बांधी बेलाख, क्युं रहूं तो बिना ॥ तुं बिना क्युं
 करी, रहूं दुःख जरी, सती युं संगें चहुं ॥ सांझा
 करी विनय सज्जन, युं अजेदें तुज मिथुं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद अठागमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ कहा करुं मंदिर कहा करुं
 दमरा, न जानुं कहां तुं उड बेठेगा जमरा ॥ जोरी
 जोरी गए ठोरी पुमासा, उड गए पंथी पड रह्या
 मासा ॥ कहा० ॥ १ ॥ टेक ॥ पवनकी गठरी कैसें
 ठराउ, घर न बसन आय बेठे बटाउ ॥ अगनी बु-
 जानी काहेकी जाग, दीप ठीपे नव कैसें उजाग ॥
 कहा० ॥ २ ॥ चित्रके नरवर कबहुं न मोरे, माटि-
 का घोग केनेक दोरे ॥ धुणकी हेरी नूरका यंता,
 उहां खेस हंसा देखो अचंता ॥ कहा० ॥ ३ ॥ फिरि
 फिरि आवन जान क्रमामा, सांपरे नारेका केसा
 विश्रामा ॥ या पुनियांकी जूनी दे यारी, जैमी य-
 ॥ २ ॥ याजीगर यारी ॥ कहा० ॥ ४ ॥ परमानन अधि-
 चल अधिनासी, सोहे गुरु परम पद यासी ॥ वि-



ए अंत होयगा न्यारा ॥ घोरा० ॥ १ ॥ चरे चीज
 अरुमरे केदसुं, उवट चळे अटारा ॥ जीन करे तव
 सोया चाहे, खानेकुं हुशिआरा ॥ घोरा० ॥ २ ॥
 खूब खजीना खरच खिलावों, थो सब न्यामत चा-
 रा ॥ असवारीका अवसर होवे, तव गळिया होवे
 गमारा ॥ घोरा० ॥ ३ ॥ ठिनु ताता ठिनु प्यासा हो
 वे, खिजमत (बहुत) करावनहारा ॥ दूर दोर जंगल
 में मारे, फूरे धनी विचारा ॥ घोरा० ॥ ४ ॥ कर हो
 चोकना चातुर चोकस, थो चावक दोयचारा ॥ इन
 घोरेकुं विनय सिखाऊं, युं पावो जवपारा ॥ घोरा० ॥ ५ ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ पांचो घोरे एक रथ जूता,
 साहिव ऊसका नितर सूता ॥ खेडु ऊसका मद
 मतवारा, घोरेकुं दोरावनहारा ॥ पांचो० ॥ १ ॥
 टेक ॥ घोरे जूठे आर आर चाहे, रथकुं फिरि फि-
 रि उवट वाहे ॥ विषम पंथ चिहुं उर अंधियारा,
 तोनि न जागे साहिव प्यारा ॥ पांचो० ॥ २ ॥ खेडु
 रथकुं दूर दोरावे, वेववर साहिव दुःख पावे ॥
 रथ जंगलमां जाय असुके, साहिव सोया कतुथ न

दिशाकी खरुकी खोसो, (तो) बाजे अनहद तूरा ॥
साधु० ॥ ३ ॥ पंचचूनका जरम मिटाया, ठेठे मांदि
समाया ॥ विनय प्रभुमुं ज्योत मिलि जब, फिर
संसार न आया ॥ साधु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद छवीशमुं ॥

॥ राग गोमी ॥ शांति तेरे लोचन हे अनिया-
रे ॥ शां० ॥ टेक ॥ कमल ज्यों मुंदर मीन ज्यों चं-
चल, मधुकरश्री अनिकारे ॥ शां० ॥ १ ॥ जाकी म-
नोहरता जीन वनमें, फिरते हरिन विचारे ॥ चतुर
चकोर परानव निरखत, वपरे चुनन अंगारे ॥ शां० ॥
॥ २ ॥ उपशम रसके अजब चकोरे, मानो बिरंची
संजारे ॥ कीर्ति विजय वाचक को विनयी, मोकों
हे अति प्यारे ॥ शां० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥

॥ राग गोडी ॥ तोलों बेर बेर फिर आवेंगे,
जीऊ जीवन मेरे प्यारे पीयुकी, जां जो सोजन पा-
वेंगे ॥ तोलों० ॥ १ ॥ बिहर दिवानी फिरुं हूं डुंढती,
सेज न साज सुहावेंगे ॥ रूपरंग जोवन मेरी सहि-
मे ॥ लीज जिन्हें देखे देखे आवेंगे ॥ तोलों० ॥ २ ॥ नाथ

चोरासी सहस्र सत्ता, णवइ अधिक वीश ॥
 लोक प्रासाद जिन ए, नमियें नामी शीश ॥ मे० ॥ ५ ॥
 पंचवर्ण उदार मणिमय, सस हस्त प्रमाण ॥ के०
 धनु सय पंच परिमित, एजिन मूरति जाण ॥ मे०
 ॥ ६ ॥ इंद्रादिक सुर सयल पूजे, करे समकित सु-
 ख ॥ केसर चंदन अंगर पूजा, रचे जाव विशुद्ध ॥
 मे० ॥ ७ ॥ घणा सुरवर सहियें जिनपद, पूजतां
 ए जिन चार ॥ ध्यान धरतां एह प्रभुनुं, सहियें
 जवनो पार ॥ मे० ॥ ८ ॥ श्री कीर्ति विजय उवजा-
 य केरो, लहे ए पुण्य पसाय ॥ सासता जिन पु-
 णियें एणीपर, विनय विजय उवजाय ॥ मे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पद ओगणत्रीशमुं ॥

॥ राग जूपाल ॥ श्री विमलाचल मंरुन आदि-
 जिना, प्रह उठी वंदो एक मनां ॥ माता मरुदेवा नं-
 दना, जावें दीगो नयन आनंदना ॥ वि० ॥ १ ॥
 रवि उदयो जग पंकजवना, विकसत बूटा
 नां ॥ होवे निंदित जो निज लोचनां, आतमहित मन
 आलोचना ॥ वि० ॥ २ ॥ चंचल ए तन धन जोवनां,
 जो मरुदेव जे जिन जीवनां ॥ जाड सफल करोरे जी-

तोहे सध, ब्रह्म ग्यानकी सेरी ॥ माया मोह
 दल, ग्यान कखा गति घेरी ॥ हो० ॥ ४ ॥ विनय
 स्वरूप संचारो अपनो, दुर्मति दूर उखेरी ॥ आप-
 हीं आपसों आप विचारो, मुगति जइ अब मेरी ॥
 ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद वत्रीशमुं ॥

॥ राग रामकली ॥ अब क्युं न होत उदासी, हो
 आतम ॥ अब क्युं न० ॥ ५ आंकणी ॥ उलट पलट
 घट घेरी रही हे, क्युं तुम आशा दासी ॥ हो० ॥
 ॥ १ ॥ निसि घासर उनसुं तुम खेलो, होत खलक-
 मां हांसी ॥ ठोरो विषम विषयकी आशा, ज्युं नि-
 कसैं जव फांसी ॥ हो० ॥ २ ॥ पूरण जइ न कबहीं कि-
 सकी, दुर्मति देत विसासी ॥ जो ठोरी नहीं सो-
 घत इनकी, तो कहा जये सन्यासी ॥ हो० ॥ ३ ॥
 रूठरही सुमति पटराणी, देखो हृदय विमासी ॥
 मुज रहेहो क्या मायामें, अंते ठोरी तुम जासी ॥
 हो० ॥ ४ ॥ आश करो एक विनय विचारी, अवि-
 चल पद अविनासी ॥ आशा पूरण एक परमेसर,
 सेवो शिवरपुरवासी ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ धावा हम विचार करलागे, हम विचार कर-
 लागे ॥ वा० ॥ टेक ॥ मनमें चिंता रहि न कोउ,
 दुःखजरम जोजागे ॥ वा० ॥ १ ॥ गुरुका शब्द तीर
 तरकसमें, करे कमान विचारी ॥ साचे सो रन स-
 मसेर हमारे, तो ग्यान घोड़े असवारी ॥ वा० ॥
 ॥ २ ॥ गोरब काज वसीला कीया, चेहेरे नाम
 लिखाया ॥ सत्य काज संतोष लगामी, तेजीका चा-
 थक लाया ॥ वा० ॥ ३ ॥ प्रेम प्रीत विच जाम न
 दीना, तुरत घरात लखाइ ॥ नाम खजाना जगत
 अछुपा, तो खुब चाकरी पाइ ॥ वा० ॥ ४ ॥ हांस-
 ल दाम खरच कहु नाहीं, तागीर करे न कोइ ॥
 विनयकुं दरसन उमदी खिजमत, जाग्य विना न
 हाइ ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ आदित आदि जिन ध्यायो, चरणारविंद उ-
 दायो ॥ चल उदयो प्रभु मुख सूर ॥ आ० ॥ टेक ॥
 सोम सुकित जयो, त्रिहुं लोक आनंद लखो ॥
 प्रभु मुख देखत चंद्र शीतल जरपूर ॥ आ० ॥ १ ॥ घर

॥ पद चौत्रीशमुं ॥

॥ यावा हम विचार करलागे, हम विचार कर-
 लागे ॥ या० ॥ टेक ॥ मनमें चिंता रहि न कोउ,
 दुःखजरम नो जागे ॥ या० ॥ १ ॥ गुरुका शब्द तीर
 तरफसमें, करे कमान विचारी ॥ माचे मो गन स-
 मसेर हमारे, तो ग्यान छोडे अमचारी ॥ या० ॥
 ॥ २ ॥ गोरव काज बर्माखा कीया, चेहेरे नाम
 लिखाया ॥ सत्य काज संतोष लगामी, तेजीका चा-
 वक लाया ॥ या० ॥ ३ ॥ प्रेम प्रीन विच जामन
 दीना, तुरत बगन खग्याइ ॥ नाम खजाना जगत
 अमुफा, तो खुश चाकरी पाइ ॥ या० ॥ ४ ॥ हांस-
 ल दाम खरच कतु नाहीं, नार्गीर करे न कोइ ॥
 विनयकुं दग्गन उमर्दी मित्रमन, नाग्य विना न
 हाइ ॥ या० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ आदिन आदि जिन ध्यायो, चरणारविंद उ-
 दायो ॥ चल उदयो प्रनु मुख मृग ॥ आ० ॥ टेक ॥
 सोम सुक्तिन नयो, त्रिदुं लोक आनंद लहो ॥
 प्रनु मुख देखन चंद्र शीतल नरपूर ॥ आ० ॥ १ ॥ घर

होइ भेटी, संजु घर नशानी ॥ महाघर सावित्रि हो-
 इ भेटी, इन्द्र घर इन्द्राणी ॥ माया० ॥ २ ॥ पंक्तिहुं
 पोथी होइ भेटी, तीरथीगाहुं पानी ॥ योगी घर
 जज्जु होइ भेटी, राजाहुं घर रानी ॥ माया० ॥ ३ ॥
 किने माया हीरो करसीनो, किने मष्टी कोरी जानी ॥
 कहम विनय गुनो अष लोको, उनहुं द्वाय बिका-
 नी ॥ माया० ॥ ४ ॥ इति ॥
 ॥ इति श्रीजशविज्ञास तथा श्रीविनयविज्ञास संपूर्ण ॥

साहिब नाम संजारो ॥ जो० ॥ टेक ॥ सुतां सुतां
 रयनविहानी, अब तुम नींद निवारो ॥ मंगलका-
 रि अमृत वेला, थिरचित्त काज सुधारो ॥ जो० ॥
 ॥ १ ॥ खिनजर जो तुं याद करेगो, सुख नीपजेगो
 सारो ॥ वेला वीत्यां हे पठतावो, क्युं कर काज
 सुधारो ॥ जो० ॥ २ ॥ घरव्यापारें दिवश वितायो,
 राते निंद गमायो ॥ इन वेला निधि चारित्र्य आवर,
 ज्ञानानंद रमायो ॥ जो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग जैरव ॥ मेरे तो मुनि धीतराग, चित्त
 मांहे जोई ॥ मेरे० ॥ टेक ॥ श्रौर देव नाम रूप,
 दूसरो न कोई ॥ मेरे० ॥ १ ॥ साधनके संघ खेल खे-
 ल, जाति पांत खोई ॥ अग्रतो बात फेस गई, जाने
 सब कोई ॥ मेरे० ॥ २ ॥ धाति करम जसम ठाण,
 देहमें लगाई ॥ परमयोग सुरूजाव, खापक चित्त
 खाई ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ तंवूतो गगन जाव, जूमि श-
 यन जाई ॥ चारित नवनिधि सरूप, ज्ञानानंद
 जाई ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ठहू ॥

॥ राग वेलावल ॥ साहिब वास पहिचानिये
जानो तेहनो जाव ॥ बह जान्या धिन ए तनु, पा
हन सम ठाव ॥ साहिब० ॥ १ ॥ ज्ञाने ग्येयकी प
कता, ध्याने ध्येय समाय ॥ निज अनुभव घट जो
इयें, कहावें स्योरमाय ॥ साहिब० ॥ २ ॥ वेद पुरानम
कतु नही, नही कतु वाको सहिनान ॥ इगं निधि चारि
तरूपमय, ज्ञानानंद सुजान ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ या नगरीमें बंधुं कर रहनां, रा
जा लूट करे सो सहना ॥ या० ॥ टेक ॥ नहीं व्या
पार इहां कोइ चाले, नही कोइ घरमाहें गहना ।
या० ॥ १ ॥ तसकर पण निज दाव विचारे, जेव
निहाले फिर फिर रहना ॥ नारी पांच शीपाइ साथें
रमण करे नित कुणसैं कहना ॥ या० ॥ २ ॥ अंजलि
जल जिम खरची खूटे, आखर इग दिन हेगा पर
ना ॥ यातें नवनिधि चारित संयुत, इग ज्ञानानंद
हेगा सरना ॥ या० ॥ ३ ॥ इति ॥

हांसे आया ॥ वेटा वेटी कवन हे, किसकी यह
माया ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ आवनो जावनो एकसो, कु
ण संग रहाया ॥ पंथक होयकर जालमें, कैसें लप
ट्यो जाया ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ नीसर जावो फंदसे,
इग ठिनमें जाया ॥ जो निधि चारित आदरे, ज्ञाना
नंद रमाया ॥ प्यारे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अगीआरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अवधू सुता क्यां इस मठ
में ॥ अ० ॥ टेक ॥ इस मठका हे कवन जरोसा,
परु जावे चटपटमें ॥ अ० ॥ ठिनमें ताता ठिनमे
शीतल, रोग शोग बहु मठमें ॥ अ० ॥ १ ॥ पानी
किनारे मठका वासा, कवन विश्वास एतटमें ॥ अ० ॥
सूता सूता काल गमायो, अजहुं न जाग्यो तुं घटमें ॥
अ० ॥ २ ॥ घरटी फेरी आटो खायो, खरची न
धांधी बटमें ॥ अ० ॥ इतनी सुनी निधि चारित्र
मिलकर, ज्ञानानंद आए घटमें ॥ अ० ॥ ३ ॥

॥ पद वारमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ बिनजारा तें खेप जरी जा
री ॥ यि० ॥ टेक ॥ चारदेसावर खेप करी तम, खान

खद्यो बहु जारी ॥ वि० ॥ फिरतां फिरतां जयो तुं
 नायक, खाखी नाम संचारी ॥ वि० ॥ १ ॥ सहस्रखा-
 ख करोमां उपर, नाम फलायो सारी ॥ वि० ॥ वेटा
 पोतरा बहु घर कीना, जगमें संपत्त सारी ॥ वि० ॥
 ॥ २ ॥ खुट्टी खरची खदगयो डेरो, पकगयो टांमो
 जारी ॥ वि० ॥ विन खरचीतें कवन संचारे, टांढे-
 की जई खवारी ॥ वि० ॥ ३ ॥ पहेखे देखी पग जो
 राखे, निधि चारित्त तुं धारी ॥ वि० ॥ ज्ञानानंद
 पद आदरतो, ग्वरची होती सारी ॥ वि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद तेरमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योगी तेरा सूना मंदिर क्युं ॥
 योगी० ॥ टेक ॥ बहु महनतकर मंदिर चुनियो,
 थव नही वसता क्युं ॥ योगी० ॥ १ ॥ तीरथजल-
 कर पहने धोया. जोग सुरजि दरब क्युं ॥ योगी० ॥
 जसमजून ए मंदिर ऊपर. घाम खगाया क्युं ॥ यो-
 गी० ॥ २ ॥ रामनाम एक ध्यानमें योगी, धूनी ज्युं-
 की ल्युं ॥ योगी० ॥ एह विचार करी जाइ नाथो,
 नवनिधि चारिन ल्युं ॥ योगी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चौदसुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अथधू बहजोगी हम माने
जो हमकुं सवगत जाने ॥ अ० ॥ ब्रह्मा विष्णु महे-
सर हमही, हमकुं इसर माने ॥ अ० ॥ १ ॥ धर-
यल वासुदेव जे हमहीं, सबजग हमकुं जाने ॥
अ० ॥ हमसें न्यारा नहिं कोइ जगमें, जग परमि-
त हम माने ॥ अ० ॥ २ ॥ अजरामर अकलंकता
हमहीं, शिवदासी जे माने ॥ अ० ॥ निधि चारित हा-
नानंद जोगी, चिदधन नाम जे माने ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंद्रहमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधो जाइ नहिं मिश्रियो
हम मीता ॥ सा० ॥ देक ॥ मीता खातर पर पर
जटकी, पायो नहिं परतीता ॥ सा० ॥ जहाँ जावै
ताहाँ अथनी अथनी, मन पख जांखे रीता ॥ सा० ॥
॥ १ ॥ संसय करुं तो कहे त्रिनाथा, बहजन रुसे नीता
॥ सा० ॥ इन ठनमें अधविचमें नृसी, कैसे कर दिन
॥ सा० ॥ २ ॥ आगम देख्यन जग नहिं देखुं
॥ राख्य जख पग रीता ॥ सा० ॥ तिनधी दूव अम-
॥ वि० ॥ रित युत, इग ज्ञानानंद मीता ॥ सा० ॥ ३ ॥

॥ पद चौदसुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ अधधू वह जोगी हम माने,
 जो हमकुं सवगत जाने ॥ अ० ॥ ब्रह्मा विष्णु महे-
 सर हमही, हमकुं इसर माने ॥ अ० ॥ १ ॥ बक्री
 घल वासुदेव जे हमहीं, सवजग हमकुं जाने ॥
 अ० ॥ हमसें न्यारा नहिं कोइ जगमें, जग परमि-
 त हम माने ॥ अ० ॥ २ ॥ अजरामर अकलंकता
 हमहीं, शिववासी जे माने ॥ अ० ॥ निधि चारित हा-
 नानंद जोगी, चिद्घन नाम जे माने ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंदरसुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ साधो जाइ नहिं मिलियो
 हम मीता ॥ सा० ॥ टेक ॥ मीता खातर घर घर
 जटकी, पायो नहिं परसीता ॥ सा० ॥ जहां जाउं
 ताहां अपनी अपनी, मत पख जांखे रीता ॥ सा० ॥
 ॥ १ ॥ संसय करुं तो कहे त्रिनाखा, बहजन रुसे नीता
 ॥ सा० ॥ इत उतसें अधविचमें जूझी, कैसे कर दिन
 ॥ सा० ॥ २ ॥ आगम देखत जग नवि देखुं
 ॥ रीनख जख पग रीता ॥ सा० ॥ तिनथी हव अम
 ॥ ३ ॥ रित युत, इग ज्ञानानंद मीता ॥ सा० ॥ ३ ॥

-

1

1

,

,

अप्रतिबंध आगति गति जासा ॥ वा० ॥ ३ ॥ कोइ
 संघयण जाके नहिं पावे, नहिं कोइ संगण निर-
 सा ॥ जां देखे तां एकही साहिय, जग नन पा-
 मितहे जमु वासा ॥ वा० ॥ ४ ॥ सो साहय तुं अ-
 पना मठमें, निरखो थिर चित्त ध्यान मुपासा ॥
 चारित ज्ञानानंद निधि आदर, ज्योतिरूप निर-
 नाय बिकासा ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बीगमुं ॥

॥ राग रामकसी ॥ जान न वामन काजी साधो,
 साहयकी गति हे गी न्यारी ॥ जा० ॥ टंक ॥ व-
 नपाद व्यय दरय परपायें, एक अनेक इगहे पुन-
 सारी ॥ मा० ॥ १ ॥ थिरना एक समय गत जाहे,
 उतपाद व्यय वण ध्रुव मारी ॥ अग्नि नास्ति नास्ति
 आग्निकहे, आगम मांदिं द्रव्य विचारी ॥ मा० ॥ २ ॥
 येमी बात हम कबहुं न जानी, किनही मुख मुन-
 नाहिं मंजारी ॥ चरम नपन कर नहिं हम निर-
 री, अनुपम मादवाद गुण धारी ॥ मा० ॥ ३ ॥
 चढ निमेषें मान नये कर, माने जग समाधि
 संजारी ॥ निधि थारिय ज्ञानानंद अतुल्य

तुजसम नहिं कोइ षड्वो करेरी ॥ मीठो घोली
 हिरिदय पैसे, लारु करे बहु जांत परेरी ॥ दू० ॥
 ॥ २ ॥ सागरमें तुं था हव तावे, पाठे गोतो देय
 टरेरी ॥ तुज कुटिखाका कवन जरोसा, बोलतही तुं
 घात करेरी ॥ दू० ॥ ३ ॥ इहां सेती तुं दूर परीजा,
 इहां थारी मति नांह लहेरी ॥ चारित ज्ञानानंद र-
 खवालो, अम प्यारी मोरे पास रहेरी ॥ दू० ॥ ४ ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ तूही पिया मन गमनो मिळ्योरी,
 लर लोर मन नांहिं मिळ्योरी ॥ तू० ॥ टेक ॥ हुं तो-
 सुं कबु नहिं चाहुं, केवल अंगें रमन करोरी ॥ तू० ॥ १ ॥
 केवल तनमय एकत जावो, मोसुं प्रेमें प्रीति करो-
 री ॥ आठ दृष्टि सखि आनम साथें, बान करो तम
 सुख वचरोरी ॥ तू० ॥ २ ॥ मनुवो सुनकर घरनी
 घानी, पास बसारे प्रीति करेरी ॥ चारित ज्ञानानंद
 सहायें, वालो धीरज चित्त धरेरी ॥ तू० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग टोडी ॥ प्यारे तम चढगान लरोरी, शां-
 ति खरुग तम तेग करोरी ॥ प्या० ॥ टेक ॥ धरम

ध्यान धारणवासी ॥ प्राणायाम समाधि सुरंगी, मू-
 लोत्तर सुविलासी ॥ मे० ॥ २ ॥ रेचकपूरक कुंज-
 क जेदें, यादर मन बशकारी ॥ चरम रंभ मध्यगेहें
 पूरी, अतद्वद नाद विनारी ॥ मे० ॥ ३ ॥ यादर
 योग युगति सह्यु चिगता, आनम ध्यान विलासी ॥
 पांचवरण पण तत्त्व सुदर्शी. परमात्म गन जामी ॥
 मे० ॥ ४ ॥ परमात्म अनुमारे करनां, निज सह्यु
 जाय विकामी ॥ चाग्नि ज्ञानानंद मन्यामी. जाने
 तिण निजवामी ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद त्रयीशतं ॥

॥ राग आशावरी फाग ॥ कंस विचार करे जाइ
 साधु, दिव्य विचारें मन आराधो ॥ के० ॥ १ ॥
 जो परम मिद्वगति अनुभवियें, संमृति विण कहा
 सिद्ध होय साधो ॥ के० ॥ २ ॥ संमृति चरुगति
 जेद कहावे, तेन जेद नीग येद मुजाना ॥ नारक
 तिरि जो परमन कहियो, निजजग नर विनने केमे
 मानो ॥ के० ॥ ३ ॥ चरुगति अथम जेह पमानु,
 नरनारी कृप पदिसि ॥ पदिसि कु-
 ण कहियें, इग विना इग ॥ ३ ॥

निरखो ज़ारी ॥ दांडी पांच चलावे जाकुं, पतवारी
 इग हे सुखकारी ॥ अ० ॥ १ ॥ चउदिसि चित्रित
 पाट पटंबर, जीतर साह्य सुता सारी ॥ चउदिसि
 तेन तरंड फिरतहे, वाखो साह्य गांफळ ज़ारी ॥
 अ० ॥ २ ॥ शैल सुनत उठ वेठे साह्य, जाज गण
 जिहां तसकर सारी ॥ चारित ज्ञानानंद संजारी,
 आनंद हरख लहे हुशियारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणत्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ राम राम सब जगहि मा-
 ने, राम रामको रूप न जाने ॥ रा० ॥ टेक ॥ कवण
 राम कुण नगरी वासो, कहांसें आयो किहां जयो
 वासो ॥ रा० ॥ १ ॥ राम राम सहु जगमें व्यापी,
 राम विना हे कैसे आखापी ॥ राम विनाहे जंगल
 वासा, पाठे कोइ जाकी न करे आसा ॥ रा० ॥ २ ॥ रा-
 महि राजा रामहि राणी, राम रामहि हैरोतानि ॥
 रटन करतहे कवन रामको, कैसे रूप वतावो वा-
 को ॥ रा० ॥ ३ ॥ जे केइ वाको रूप वतावे, तेहिज
 साचो मुज मन जावे ॥ सो निधि चारित ज्ञानानं-
 दें, जाने आपनो राम आनंदें ॥ रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥

॥ राग आशावरी ॥ योगममाधि योग आधारो,
 योगममाहेँ तत्त्व विचारो ॥ यो० ॥ टेक ॥ कान-
 तपरसे ग्वार कीनारे. अनुपम एक नगर सुखका-
 ते ॥ यो० ॥ १ ॥ जामें जीव अनन रहाहे, कृण
 समरथ ते गिणनां मानां ॥ नादि अननता आयु जे-
 हनो, पदुविध परिगल रिझि यग्वानो ॥ यो० ॥ २ ॥
 वंचनीच जिह्वा जेद नहीं हे, सब जन जूपति जाव
 निहासो ॥ चारित ज्ञानानंद संतासो. जिम पामो
 पुरिवास विशासो ॥ यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग तुमरी ॥ मंदिर एक घनाया ह्मने ॥
 मंदिर० ॥ टेक ॥ जिस मंदिरके दश दरवाजे, एक
 बुंदकी मायां ॥ नानो पंग्व) जाके अंतर, राज करे
 चित्त लाया रे ॥ मं० ॥ १ ॥ हाड मांस जाके नहिं
 दीसे, रूपरंग नहिं जायां ॥ पंग्व न दीसे कहसे
 पिठानुं, पटग्स जोगे जायां ॥ मं० ॥ २ ॥ जातो
 आतो नहिं कोइ देखे, नहिं कोइ रूप घनाये ॥
 सब जग खाया तो पण जूखा, तृप्ति कवहिं न पा-

वेरे ॥ मं० ॥ ३ ॥ जाखम पंखी ताखम मंदिर,
पाठे कोन बत्तावेरे ॥ वह पंखीको जो कोइ जाने,
सो ज्ञानानंद निधि पावेरे ॥ मं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद वत्रीशमुं ॥

॥ राग तुमरी ॥ इतना काम करे जे जोगी, सोइ
योग न जानेरे ॥ इ० ॥ टेक ॥ मूंन मूंनया जस्म
लगाया, जोगी ना हम जानेरे ॥ बक्तर पहेरी रण
कुंजीतें, सो योगी हम जानेरे ॥ इत० ॥ १ ॥ राजा
बसकर पांचों जीते, दुर्धर दोयने मारेरे ॥ चार
काटके सोल पित्राके, सोइ योग सुधारेरे ॥ इत० ॥
॥ २ ॥ जाएत जावें सरब समय रहे, परमचारिप्र
कहावेरे ॥ ज्ञानानंद लहेर मनवासा, सो योगी म-
न जावेरे ॥ इत० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नेत्रीशमुं ॥

॥ राग तुमरी ॥ यादिनकुं नहिं जाना जयतक,
कैसा ध्यान लगायारे ॥ वा० ॥ टेक ॥ जटा बधा-
री जस्म लगाइ, गंगा तीर रहायारे ॥ वरध याद
थातापना सेइ, योगी नाम धरायारे ॥ वा० ॥ १ ॥
चार वेद धनि सूत धारकर, वामण नाम कहायारे ॥

हुं हरानी, तूं मत रीस चढावेरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ए-
 तला काल नपुंसक जानी, मंदिरमांहु रहावे रे ॥
 सघलाइ मानसने तूं ठेले, एहि अचंनो आवे रे ॥
 हुं० ॥ २ ॥ आसपास ना अमने देखी, कुटिला
 जाव जनावे रे ॥ बह्वज सांजल मोकुं ठांके, मोरी
 दुरमत जावे रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ तूं तो निरलज ज्यो
 मतवालो, थारी कवन चलावे रे ॥ अम बह्वज ज्ञा-
 नानंदसाधें, अंगोअंग मिलावे रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद ठत्रीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ योगी यासैं चित्त रमायो, या-
 की जगति करत हुं ॥ यो० ॥ टेक ॥ मेरो तो योगी
 घालो जोलो, वरमचारी मन जायो ॥ यो० ॥ जो यह
 देखे सोइ खोजावे, मतवालो जग जायो ॥ यो० ॥ १ ॥
 योगी खातर घर घर जटकी, यह योगी अव पायो
 ॥ यो० ॥ अमनें बह्वज याकुं मान्यो, मेरो चित्त
 खोजायो ॥ यो० ॥ २ ॥ निरखोजी निकलंकी योगी,
 योगी योग रमायो ॥ यो० ॥ निधि चारित ज्ञानानंद
 मूरति ॥ प्राण पियारो पायो ॥ यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

नानंद योगी, मिलकर अंग मिलायो ॥ सु० ॥ ३ ॥ इति

॥ पद उगणचाखीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ मैं कैसे रहूं सखी, पियांगयो प-
रदेशो ॥ में० ॥ टेक ॥ रितु वसंत फूझी बनराइ, रंग
सुरंगीत देशो ॥ में० ॥ १ ॥ दूरदेश गये लाखची बाख-
म, कागल एको न आयो ॥ में० ॥ निर्मोही निमोही
पिया मुऊ, कृण नारी लपटायो ॥ में० ॥ २ ॥ वसंत
मासनी रात अंधारी, कैसें धिरह बुजायो ॥ में० ॥
इतने निधि चारित पुत बहज, ज्ञानानंद घर आ-
यो ॥ में० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चाखीशमुं ॥

॥ राग वसंत ॥ मेरे पियाकी निशानी, मोरे हा-
थन आये ॥ में० ॥ टेक ॥ रूपी कहूं तो रूप न दीसे,
कैसें करी वतलाये ॥ में० ॥ १ ॥ जोति सरूपी तेह
विचारूं, कर्मबंध कैसें जाये ॥ में० ॥ सिद्ध सना-
तन ठपजन दिनसन, कैसें विचार सुहाये ॥ में० ॥
॥ २ ॥ वेद पुरानमें नहिं कहि दीसे, कृणपर नाव
रमाये ॥ में० ॥ यातें चारित ज्ञानानंदी, एकहिं
रूप कहाये ॥ में० ॥ ३ ॥ इति ॥



फिरतां थाराहि मानस, अंगुलीयां दिखसावे
 पि० ॥ ३ ॥ तिनतें तूं मगरूरी ठांडी, जग सम समता
 लावे ॥ तो नवनिध चारित्र सहार्यें, ज्ञानानंद पद
 पावे ॥ पि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद तेतालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ विन वाखम कहो कुण गति
 माहरी, वाखम हीं गति नारी ॥ वि० ॥ टेक ॥ सुनो
 सखी तुम वेग मनावो, सझ्यां खावो निहारी ॥
 विन० ॥ १ ॥ चांदनी राते मकरध्वज शर, आयलंग्यो
 दुःखकारी ॥ विरहव्यथायें अमने खिनजर, सुख
 नहिं पामे सारी ॥ विन० ॥ २ ॥ जखविन मठसी
 सम टखवखती, विरहजाख जइ चारी ॥ इतने ज्ञा-
 नानंद वाखम आए, चारितसंग सुखकारी ॥ वि० ॥ ३ ॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥

॥ राग सारंग ॥ सेठ वेठे सारंग महसमें ॥ से० ॥
 टेक ॥ सेठानी मोह नरपति वेठी, वेठा चार अनो-
 पमें ॥ से० ॥ मिथ्या मकरध्वज जसु जाई, व्यापारें
 गणि कोपमें ॥ से० ॥ १ ॥ उंची हाट धिठात धिठाइ,
 सुण करे नवरंगमें ॥ से० ॥ कनक रतननां झूखन

निसि रंगमें ॥ सा० ॥ १ ॥ जिम जिम जोगे
 म तिम पावे, क्युं जटके मति चंगमें ॥ मृगमर
 गंधें मृग सम जटके, घट अनुजब नहिं रंगमें ॥
 सा० ॥ ३ ॥ निर्मल गंगानीर जे लाधो, खारी कुण पीवे
 घाटमें ॥ तिनतें निजघर चारित संयुत,
 जोषो ठावमें ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वेंतालीशमुं ॥

॥ राग कहेरया ॥ सख्यां मुज गेंदा मंगायेदे
 गेंदाफी थाइ हे बहार ॥ प चाख ॥ यार मोह ना
 री मिखायेदे, यारोंका पाही हे मिखाय ॥ या० ॥
 टेक ॥ रूपयंत मोह नारी मिखायेदे, उत्तम कुल पु
 ष पाय ॥ या० ॥ १ ॥ पहिखीनारी मुज जटकायो,
 परघर रमवा दाख ॥ या० ॥ ते मुज कृतापण क
 ह्यायो, जग जन कहेते त्रिनास ॥ या० ॥ २ ॥
 मुकूलीनी मोहे नारी मिसे जो, नो थम थित मु
 ख प्राय ॥ या० ॥ इननी सुनकर व्यायक मंतरी,
 सुमतिनो मेसन कराय ॥ या० ॥ ३ ॥ परनी संगें हरख
 घरीने, अंग रहे खपटाय ॥ या० ॥ आग्रि थाइर
 ज्ञानानंदे, नवनिधि सहज सहाय ॥ या० ॥ ४ ॥

अब हम हाथ, ढीछ न करो प्यारी चलो हम
 थ ॥ मे० ॥ तम खातर अम दुःख बहु कीन, प्या-
 री मत ठांहे अमने दीन ॥ मे० ॥ १ ॥ नारी कहे
 परो जारे निगोद, थारे मारे कुण करे वात निखो-
 द ॥ मे० ॥ अम अब चाखुं किहां थारे संग धूत,
 तुं मूरख शिर मोल कुमूत ॥ मे० ॥ ३ ॥ इतनी
 सुनकर जयो ते उदास, कुटिला अबलानी कुण क-
 रे आस ॥ मे० ॥ तिन अबसर लही निधि चारित,
 ज्ञानानंद मूरति जजे सुख चित्त ॥ मे० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद उंगणपचाशमुं ॥

॥ राग कहेरवा ॥ एक अचंचो मुज मन बशि-
 यो ॥ ए० ॥ टेक ॥ चालतो हासतो रुंगर दीगो,
 विचमें एक सिखर उंचो वसियो ॥ ए० ॥ १ ॥ ओटा पांच
 शिखर जसुं चलदिशि, नाना तरु विण मंडित रहि-
 यो ॥ ए० ॥ सरव काल सागर विच रहितो, कवन
 चलावे ते अम कहियो ॥ ए० ॥ २ ॥ मानस नहिं
 कोइ तेहमां दिसे, ध्रुव अध्रुवपणो तेहमें रहियो ॥
 ए० ॥ रुंगर विच नवनिधि चारित्र युत, ज्ञानानंद
 मूरति गुण गहियो ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

मन राखो रहे ना ॥ वा० ॥ १ ॥ नारी कालीना-
 गन सरिखी, देखत चित्त कामानोल करे रे ॥ वा० ॥
 नारीसंयोगें वरमदत्त परमुख, नरकें दुरधर दुःख
 चरे रे ॥ वा० ॥ २ ॥ आर्द्धकुमर मुनि नारि संयो-
 गें, वरस चउबीस गिहिवास कियो रे ॥ वा० ॥
 नारीकी प्रीतें इनजव परजव, सुख न लहे पगबंध
 जयो रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ उत्तम नर इन नाहिं घतावे, ध्यान
 धरे वनमांह रहे रे ॥ वा० ॥ निरमल निजगुन आ-
 तम ध्याने, सुख समाधि जाव लहे रे ॥ वा० ॥ ४ ॥
 तिनतें बालम तम पण समजो, कुटिलानी प्रीतकी
 परिहरो रे ॥ वा० ॥ मोसुं तो निधि चारित्र आदर,
 ज्ञानानंद सुख रमण करो रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद बावनमुं ॥

॥ राग सोरठ ॥ देश माहरो पियाकुं घताय दि-
 जो रे, मेंतो खेउंगी जोगनियाको वेस ॥ दे० ॥
 ए चाल ॥ कोइ सखी पियाकुं घतावैरी, मेंतो जाउंगी
 बालम पास ॥ को० ॥ टेक ॥ सारी जग्या पूठीयो, बाल
 मजीको देश ॥ कोइको साच नहिं लह्यो, जो कागल
 पहुंतें देश ॥ को० ॥ १ ॥ ज्ञानी ज्ञानी सब कहे,

गाथाज, प्यारी तूं वनिदगावाज ॥ टेक ॥ तेरे खा-
तर मंगर दरि विच, रही दुःख सहो में थपार ॥
हांसी खुसी धहु नातरां कीधां, तूं कांइ जूखि गवार ॥
रे तूं वनि० ॥ १ ॥ कवडी साटे तेरे खातर, माहरो
किधो मोख ॥ हूंढक योगी यति सन्यासी ॥ मुंनि-
त कियो तैं रोख ॥ रे तूं वनि० ॥ २ ॥ मुहमो बांधी
कान ते फाडी, धहुविध वेस कराय ॥ कपट करी स-
हु पाखंर कीधा, जन लुंठ्यो मन जाय ॥ रे तूं व-
नि० ॥ ३ ॥ घर घर जटक्यो तेरे साथें, पोतें पाप ज-
राय ॥ अथ तूं काह न घोले मोसुं, तूं कपटीनी दि-
खलाय ॥ रे तूं वनि० ॥ ४ ॥ ऐसो देखी जयोहूं उदा-
सी, निधिचारित्र लहाय ॥ ज्ञानानंद चेतनमय मूर-
ति, ध्यान समाधि गहाय ॥ रे तूं वनि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद उपनमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ प्यारे साहेबशुं चित्त लावोरे,
साहेब दूर कहलावो रे ॥ प्या० ॥ टेक ॥ साहेब
एकही है जग व्यापी, नहि कहे जेद लहावे रे ॥
प्या० ॥ १ ॥ जे केइ साहेब जेद बनावे, ते बहुग जग
पावे ॥ पारसनाथ कहे कोइ घरमा, विष्णु शिव कहे-

सावे रे ॥ प्या० ॥ २ ॥ ध्यान ध्येय इग पारसरूप,
ज्योतिरूपवरम जावे ॥ केवलान्वयो ज्ञानी ते विष्णु
शिववासी शिव जावे रे ॥ प्या० ॥ ३ ॥ जोतिरूप सा-
देव तो इगही, तिनसुं ध्यान लगावो ॥ निधि चारित्र्य
ज्ञानानंद मूरति, ध्यानसमाधि समावोरे ॥ प्या० ॥ ४ ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥

॥ राग मद्धार ॥ देखो पिया आगम जहवेरी
आयो, नाना जूखन लायो ॥ दे० ॥ टेक ॥ विनय
कनकनो घाट बनायो, संपम रतन लगायो ॥ नि-
रमल ज्ञानको हीरक बिचमें, दरशन मानक जा-
यो ॥ दे० ॥ १ ॥ स्थायक वेदुर्यनी पंगति, मौक्तिक
ध्यान लगायो ॥ सुमिति शुभति लीलम विह्वल जि-
हां, शेष तत्त्व कहलायो ॥ दे० ॥ २ ॥ ए सहु जूषण
मोक्ष थमोक्षा, निरखत चित्त लोलायो ॥ हरपें नि-
धि चारित निहाखो, ज्ञानानंद रमायो ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति

॥ पद अष्टावनमुं ॥

॥ राग मद्धार ॥ ज्ञानकी दृष्टि निहाखो, यास
म तुम थंतर दृष्टि निहाखो ॥ था० ॥ टेक ॥ याह
दृष्टि देखे सो मृदा, कार्य नाहिं निहाखो ॥ धरम

जाइ, निजघट अंतर जावो ॥ सा० ॥ टेक ॥ मेरा
 तेरा कहा करतहे, नहिं कबु तेरा जावो ॥ सा० ॥
 जग जन किरिया कहा दिखलावे, कहा जग जन
 समजावो ॥ सा० ॥ १ ॥ निज निजमत पक्ष हठ-
 ता वारो, अंतर जाव विचारो ॥ सा० ॥ हाहाहस
 अज्ञान निवारो, ज्ञान मुधारम धारो ॥ सा० ॥ २ ॥
 नव्य विचारें प्रेम लगावो, निजगुण विमल निपावो ॥
 सा० ॥ नवनिधि चारिन प्रेमं आदर, ज्ञानानंद र-
 मावो ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद इकोनेगमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ तुम मखि निरखोरे याइ, सो-
 तकी सेगइ अम वासमवा ॥ तु० ॥ टेक ॥ आगे
 आगे पिया चसतहे, पातें मोतकी याइ ॥ दामी प-
 ण ते तेहनें मार्ये, कृटिआ विन सोताइ ॥ तु० ॥ १ ॥
 अमने सङ्गण एहवो दीम, वासम गये नरमाइ ॥
 मोह नृपतिके जासैं अटम्यो, अथ नहिं निकसे याइ
 ॥ तु० ॥ २ ॥ कोथादिक तेहनें रगवासा, कांट विप-
 म डु मडाइ ॥ तेहनें चउदिमि मान विमनहे
 अहोनिज संपट सांइ ॥ तु० ॥ ३ ॥ दामी युन इ

धी० ॥ ४ ॥ सुमति आगम मंत्री साथै,
 कसाइ ॥ हरखें आव्यां निज घरमांहें,
 कराइ ॥ धी० ॥ ५ ॥ तिन अवसर निधि
 आदर, ज्ञानानंद रमाइ ॥ अनुजब प्याला प्रेम
 साखा, रंगें पान कराइ ॥ धी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद तहोंतेरमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ तुम किहां चाखोरे सांइ,
 साथै हुं योगन जइ अथ ॥ तु० ॥ टेक ॥ तेरे ख
 र हम घर ठांडी, थारे संग चित्त लाइ ॥ किन
 हमने ठांनिके चाले, कैसें प्रीत खगाइ ॥ तु० ॥
 किन कारन अमने दुःख बीनो, काहे कुं घर मू
 इ ॥ घात विश्वास करे कहा मोसुं, कुणने पुक
 जाइ ॥ तु० ॥ २ ॥ सांइ कहे अम घरकी याही,
 पुरानी जाइ ॥ जयखग तेख दिपकमां याती, तप
 ग अम तम जाइ ॥ तु० ॥ ३ ॥ इतनी कहकर स
 चाखो, अपने ठाम सुहाइ ॥ अनुपम नवनिधि
 रित्र आदर, ज्ञानानंद रमाइ ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति

॥ पद चम्पोतेरमुं ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीसंयम तरंगः प्रारभ्यते ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग जैरव ॥ योगनंद आदरकर संतो, अरु
 दुति लय लावो ॥ यो० ॥ टेक ॥ अंतर पटचक्र सो
 धन करकें, वंकनाल कर जावो ॥ यो० ॥ १ ॥ चंड
 सूरज मारज जुग तजकर, सुपमन परवाह जानो ।
 कुंजक रेचक पूरक जावें, प्रत्याहार प्रमाणो ॥ यो० ॥
 ॥ २ ॥ धारण ध्यान समाधि सपत्तम, श्वास रोधन
 करतानो ॥ अनुपम अनहद धनी अनुयोगें, सोह
 सोहं गानो ॥ यो० ॥ ३ ॥ सोहं सोहं रटना रटतां, नव
 निधि संयम जायो ॥ झानानंद परमात्म रोचि
 देखत हरख सहायो ॥ यो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ राग जैरव ॥ जग जन निंदडी तजकर संतो,
 योग निंद संचारो ॥ ज० ॥ टेक ॥ नाना लवधि
 निधाननं थानक, सकल संपद आधारो ॥ ज० ॥

॥ १ ॥ दिविष्य द्विपमय देवि नवि ह्ये. निर्वेपी पी-
 त्तागो ॥ शंभु मित्र समजाय रहे नित्य, दरदासन
 प्यान जागो ॥ ज० ॥ २ ॥ योग निंद लय नापे नि-
 नने; कौह न करे अपगारो ॥ मीत समान संये ज-
 सु रिपुगण, पयन पक्षे जगसारो ॥ ज० ॥ ३ ॥ तत्पार
 आपदनो जसु नवि नय, पंचविजय छदे सारो ॥
 निधिचारित्त हानानंद आदर, परमानंद निहा-
 रो ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग जैरवी ॥ प्राणपिया नम ऐसी सयजी पी-
 धोरे ॥ प्रा० ॥ टेक ॥ निज सुज परिणति अनुपम
 सयजी, तिखी मरी विवेक खेवो रे ॥ प्रा० ॥ तत्त्व वि-
 चार विविध सुमसाखा, उपसम कंकर कुंकी मेवो
 रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ कुटिल निवृत्ति समता प्रेम, संयम
 रगटा साधो रे ॥ प्रा० ॥ धरम शुक्ल पय सुरजीस-
 र केरा, संवर साफ गुनानो रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ अ-
 नुभव हानका रतन पियाखा, जर जर समता पिखा-
 वे रे ॥ प्रा० ॥ निधि चारित्र हानानंद योगी, पी-
 यत ध्यान लगावे रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥

॥ राग जैरवी ॥ गगन मंडलगत परम अरुण
 रुचि जायो रे ॥ ग० ॥ टेक ॥ चंद कहुं तो चंद न
 निरखुं, तरणि पिण न जनायो रे ॥ ग० ॥ तेज ति-
 खा दिन दीप न निरखुं, जगमग रुचि सुखदायो रे
 ॥ ग० ॥ १ ॥ घन समीर परमुख उपाधि, रहित रु-
 चिर दरमायो रे ॥ ग० ॥ सब जग व्यापी पांचहि
 जाते, पण नहिं जाव रमायो रे ॥ ग० ॥ २ ॥ पंडित
 योगी सघले थाके, निज हठ पग्न खपटायो रे ॥
 ग० ॥ आपहिं निरखे आपहिं जाने, सहज समाधि
 जगायो रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ तब घर घरकी जरमना मे-
 टी, सहज रूप परखायो रे ॥ ग० ॥ निधि संयम
 ज्ञानानंद योगी, ज्योति निरख हरखायो रे ॥ ग० ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग वेलावल ॥ निज परिणति चित्त धारियें,
 पर परणति तज सार ॥ नि० ॥ टेक ॥ जवलग रहे पर
 परिणति, तबलग जव त्रम धार ॥ नि० ॥ १ ॥ अपनी
 पूंजी लख नहिं, कुमता संग चित्त खोल ॥ राजपूत
 होय परमते, ते कायर समझोल ॥ नि० ॥ २ ॥ किंपाक

विजाव हे सपही, अपनो न ठांड हे कबही
 सा० ॥ १ ॥ कोइ प्रकारें नहि देखो, उपर बीजको
 खेखो ॥ रासज गंगाजल धोयो, तोपण लोटे उ-
 कढायो ॥ सा० ॥ २ ॥ सूकर पायसकुं ठंकी, अ-
 शुचि जोगें जे मंकी ॥ मधु घृतकर सींचो तबहीं,
 नीय न मीठो होय कबहीं ॥ सा० ॥ ३ ॥ हानी
 ध्यानी के छेपी, निजमत पखपातें पेखी ॥ तिनतें
 अनुजव हानानंदें, सुजजो चारित्र आनंदें ॥ सा० ॥ ४ ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग काफी ॥ देखो प्यारे सब जग कसही,
 नहिं कोइ शांति मूरत पेही ॥ दे० ॥ मुनिजन उपसम
 गुण धारी, कसही कोष कारण सारी ॥ दे० ॥ १ ॥
 सेठकुं तसकर सहु गावे, तसकर सेठ करी छावे ॥
 सतवादीकुं कहे कूना, मिरखाकुं सत कहे मूना ॥
 दे० ॥ २ ॥ कमल प्रज सूरि जानो, श्रुति दृष्टांत
 कहे मानो ॥ तिनतें निधि चारित धारी, जजो झा-
 नानंद अधिकारी ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥

॥ राग काफी ॥ सब जग जन

जिहां

नज परमित जसु ठाया रे ॥ ग० ॥ टेक ॥ तिनपर
 अरुण प्रज गज मैथुन, करत कखोस सुजाया रे ॥
 ग० ॥ १ ॥ ताहू जामको पान चुगत है, अनादि अनंत
 तसु संगें रे ॥ ता नीचें एक रहत मरगवा, स्वाधो
 गज निज रंगें रे ॥ ग० ॥ २ ॥ गरदन मित जसु
 बाहर दीसे, कैसें जीवन बंटे रे ॥ काळांतर तेहूची
 गज जायो, मृगहन नरपति खंटे रे ॥ ग० ॥ ३ ॥
 जिन दिन जे गज नरपति जाने, अपनो खोज ग-
 मावे रे ॥ तव निधि चारित्र्य ज्ञानानंदें, मातंग आ-
 सन पावे रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग सोयनी ॥ दीपक होत उजियारो ॥ दी० ॥
 टेक ॥ विन दीपक मंदिर अंधियारो, कैसें करे रु-
 चियारो ॥ दी० ॥ १ ॥ घोर घटायें रयण अंधारी,
 जान न पदारथ सारो ॥ दी० ॥ २ ॥ जरुजरु योगें
 कत परिणति, निजगुण दीप बीसारो ॥ दी० ॥
 विन दीपक चेतन जयो पशुपर, स्वभाव
 सधारो ॥ दी० ॥ ४ ॥ सबजग तप जप
 विरया, आतम अनुभव धारो ॥ दी० ॥

अनुजव श्रंधक नर हूँढत, अनुजव दीप जगारो ॥
 ॥ ६ ॥ तातें श्रवधू मत ठहराणी, हेय ज्ञान
 विचारो ॥ दी० ॥ ७ ॥ तेहथी निधि चारित रिधि
 मी, ज्ञानानंद निहारो ॥ दी० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद शोखमुं ॥

॥ राग सोयनी ॥ प्यारी नेह खगारो ॥ प्या० ॥
 एक ॥ दिनप्यारी घर घरमें जटकत, कायर जाव दे-
 वारो ॥ प्या० ॥ १ ॥ कुमतियोगें चार नगरमें,
 विविध रूप विसतारो ॥ प्या० ॥ २ ॥ पांच जातका
 वेस पहराया, निजप्यारी दिन हारो ॥ प्या० ॥ ३ ॥
 तेवीस विषयके फंदमें नाखी, पापघान विसगारो ॥
 प्या० ॥ ४ ॥ हास्यादिक वज्र कोटें घेख्यो, निजसु-
 ध बुध विसरारो ॥ प्या० ॥ ५ ॥ तिनतें प्यारी युत
 निधिचारित, ज्ञानानंद खहे सारो ॥ प्या० ॥ ६ ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥

॥ राग बरुवा ॥ एक समीरका सहर बना हे, अ-
 दभूत पंच वाजार तना हे ॥ प्या० ॥ टेक ॥ दस मार-
 ग दसही दरवाजें, चळ थासा चळ नगर विराजें ॥
 एते ॥ १ ॥ तेवीस वसंत जिहां नितप्रति दीपे, खेत

देत सद्य जगकुं जीपे ॥ ए० ॥ आना जाना एकहुं
 कालें, एक विना रहे नगर विचालें ॥ ए० ॥ २ ॥
 एक दरवगत नित्य अनित्यें, चटपट जाव घसे सद्य
 चित्तें ॥ ए० ॥ जिन दिन सघखो खोज गमावे, तो
 निधिचारित्र ज्ञान निपावे ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद अठारमुं ॥

॥ राग बरुवा ॥ गुरुगम अनुजव शैली धारो, इस
 पदका निर्वाह विचारो ॥ गु० ॥ टेक ॥ सरव समय
 रवि रुचिकर हीना, विविध स्वापदयुत गहन वि-
 लीना ॥ गु० ॥ १ ॥ काळा मिरगा निज बल वनराजो,
 नितप्रति राज अखंड समाजा ॥ गु० ॥ निर्दय नि-
 ज बेरीगण भारे, मास विना न जखे खिन सारे ॥
 गु० ॥ २ ॥ चक्री हरिवल परमुख जोधा, पिण मि-
 रगा नवि वस किया सोधा ॥ गु० ॥ तेहने पिन मिरग
 खिन जख कीधा, कुन समरथ वस करने सीधा ॥
 गु० ॥ ३ ॥ अमर बिरुद दरवें जग धारे, मरन जीव-
 न नवि चेहुं सारे ॥ गु० ॥ इगदिन हरिची नपुंस-
 क जायो, अनंतवल्ली पिण नहिं तोलायो ॥ गु० ॥
 ॥ ४ ॥ एकहि घातें मिरगने माख्यो, कंठी रवनो

राज सुधास्यो ॥ गु० ॥ तब निधिचारित्र कमला संगें,
खहे निर्मल ज्ञानानंद रंगें ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद जंगणीशमुं ॥

॥ राग जंगला ॥ ज्ञान विचारो रे जाइ, गुरुग-
म शैली आदर संतो ॥ झा० ॥ टेक ॥ गगनमंडल ग-
त विविध तूर धनी, घोर स्वरें कर वार्जे ॥ पाथोरण
धिन घनाघन वरसे, गिरीपम ताप समाजे ॥ झा० ॥
॥ १ ॥ यामें रहत घतासा कोरा, वजर गले इगता-
ने ॥ वासर दिन अरुण प्रज जासे, तेजें जलहल जा-
ने ॥ झा० ॥ २ ॥ मानस नहिं जिम मानस मेला,
निरखत खहे आनंदें ॥ निधिचारित ज्ञानानंद प्रे-
मैं, रमण करे सुखकंदें ॥ झा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद वीशमुं ॥

॥ राग जंगलो ॥ ग्यान विचारो सांई, जटपट
अनुभव प्रीत लगार्सी ॥ ग्या० ॥ टेक ॥ जीर्ण कुटीरें
चेंपायेगळ, कां लग वास रहासी ॥ घनाघन वरस-
त तटनी पुरें, थापोथाप वहासी ॥ ग्या० ॥ १ ॥ तातें
अवधू चारने वरजी, निज सासू बतलावो ॥ चार
पांच सखि वरगें हिलमिल, मोकुं हिरदय जावो ॥

ग्या० ॥ २ ॥ अष्टादस विध जोजन जिमो, तिरिवे-
णी जख न्हाइ ॥ पठिम पावड साखा मारग, धार उ-
घाडो सांइ ॥ ग्या० ॥ ३ ॥ विविध वाजित्र धनि सां-
जख निरखे, मुगताफल तरुसांइ ॥ तव निधि चारित्र
ज्ञानानंदें, नाचे हरख जराइ ॥ ग्या० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥

॥ राग तिहाना ॥ जोगीयासें यारी कीनी हो,
ज्ञान दिनंदा ॥ जो० ॥ टेक ॥ ज्ञान दिनंदा त्रिभु-
वन चंदा, तटनी तटनि वसंदा, धरम जाव कठोट
धरंदा, घाती जसम खिपंदा ॥ जो० ॥ १ ॥ सादि
सांत दृढ आसनधारी, सुं निज परिणति जायी ॥
ज्ञेय मसाखा प्रेमका प्याखा, योग नींद सय लायी ॥
जो० ॥ २ ॥ तत्वविचार जटा बधारी, अनहद धुनि
चिंत लाइ ॥ निधिचारित्र सुज सेजें प्यारी, ज्ञाना-
नंद मचकाइ ॥ जो० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद बावीशमुं ॥

॥ राग तिहाना ॥ गगनें घन निरस्थानी हो, हर-
ख सहाणी ॥ ग० ॥ टेक ॥ तिहां शुचि दग अमि-
सर निरस्थानी, परमानंद निसानी ॥ तट मुगताफ-

घरनी, निहचै तेहने जानी ॥ निधि संयम ते वान
धारी, झानानंद बिखसानी रे ॥ पि० ॥ ४ ॥ इति

॥ पद चोवीशमुं ॥

॥ राग मल्हार ॥ मेरी तुं मेरी काहाडरे ॥ मे
॥ टेक ॥ मेरी प्यारी गुण गण नूपित, हिरदय हा
रपरे ॥ तुजविन नांहिं रहुं किण ठामें, जिम शिव
सगति चरे रे ॥ मे० ॥ १ ॥ इम पियुवाणी सांज
महिपी, परम परमोद बहे ॥ दंपति मिखकर सेजे
बैसैं, अंतर तत्व गहे रे ॥ मे० ॥ २ ॥ अंगो अंग
पारसन कर प्रेमें, धन मुगतिक वरसावे ॥ तब नि
धि संयम झानानंदें, शीतल जाव निपावे रे ॥ मे० ॥ ३ ॥

॥ पद पच्चीशमुं ॥

॥ रागी गोमी ॥ निजधन काह गमावे ॥ संतो नि
ज० ॥ टेक ॥ घोष जारु बंबूखके तेनैं, आंव कहांसैं
खावे ॥ बेलू पीलत तेख न नीकसैं, मूरख जग कह-
खावे ॥ सं० ॥ १ ॥ कोपी फणिधर रिजुता न पामे, तीम
जरुयंस निहासो ॥ सेखडी गांठे रस नवि पामे, खं-
जन सेत न जासो ॥ सं० ॥ २ ॥ अनुपम दूधें साप खि-
खावे, हाखाहख होय जावे ॥ धनधी पिन भगसिख

नवि जीजे, निवटे मधूता न पावै ॥ सं० ॥ ३ ॥ एह
विचार करी जाइ संतो, निधि चारित्र रमावो ॥ तव
ज्ञानानंद पद अनुभवतां, कमला सहज निपा-
वो ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद उर्वीशमुं ॥

॥ राग गोभी ॥ तनमय सदागम सेवो ॥ अध-
धू ॥ त० ॥ टेक ॥ जघलग सदागम सेवन नाहि,
पखपातें खपटेवो ॥ रतन पुंज पाहन सुत जाने,
चंदन इंधन सम देवो ॥ अ० ॥ १ ॥ मोटे मोटे पा-
हन तरुवर, रतन चंदन दिखलावे ॥ रासज कूतर
हय गज मोलें, खेवे ते मूढ कहावै ॥ अ० ॥ २ ॥
रतन फंघल बखकल चीवरसम, चर्यण घृत पूरमा-
ने ॥ सकल वस्तु इग मोल चलावै, खोट साच न-
धी जाने ॥ अ० ॥ ३ ॥ अन्याय पूर जन पदमें रह-
कर, क्युंकर खाज गमावो ॥ तेहची निजघर संय-
म आदर, ज्ञानानंद गमावो ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद मत्तावीशमुं ॥

॥ राग विहाग ॥ हरक सान संग वारो ॥ संतो ॥
ह० ॥ टेक ॥ पवनवेग निज हय पर चढकर, कुंत

कृपाण शरधारो ॥ कूतरा कूतरी दासी हनकर, व
 जूधर पाजो ॥ सं० ॥ १ ॥ विपद्हर अमृतपान संयो
 निर्विय जाव बधारो ॥ सदागम संयम धर नृप
 ना, निखिलपुरे वरतारो ॥ सं० ॥ २ ॥ जयलग
 नो हरुक न मारे, दरशन नाण न पावो ॥ तेह
 ना संयम पिण नाहिं, साध्य सिद्धि किम जावो
 सं० ॥ ३ ॥ साधक सुज साधन नवि पामें, तेह
 हरुक निवारो ॥ निधि संयम ज्ञानानंद अनुज
 परमानंद सुख धारो ॥ सं० ॥ ४ ॥

॥ पद अष्टावीशमुं ॥

॥ राग धिहाग ॥ हरुक सान संग नावो ॥ अ
 धू ॥ ह० ॥ टेक ॥ जिम जिम निर्मल घनाघन व
 रसे, महि नवपल्लव रावो, तिम तिम हरुकिय वा
 बिकारें, अहनिस हरुक सरावो ॥ अ० ॥ १ ॥ काल
 कुतरी पण ठे तेहवी, सरिखो जोग मिलावो ॥ नि
 जमति जोगें गिरिवर चढियो, जाति संगति टखा
 यो ॥ अ० ॥ २ ॥ नृपविन नृपनिति ते चखावे, जग
 जन मान न माने ॥ तेहने गुरु जन हित धतखावे,
 तोपिन ध्यान न जाने ॥ अ० ॥ ३ ॥ हरुक हरुक घ-



कर, खेचरी मुझा धार ॥ सूखम पवने गगन मं-
 ल गत, दृष्टि पतंग परसार ॥ सं० ॥ २ ॥ गुण श्रे-
 णी गत जोक टालो, अप्रमत्त जाव वधार ॥ सहस्र
 पर थकत यिति खंय, जग जस सूर विचार ॥
 सं० ॥ ३ ॥ सकल पररिधि काप संतो, धीर प्रमोद
 जराय ॥ ज्ञानानंद नवनिधि संयम, नाचै निरख
 हरखाय ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥

॥ राग जीजोटी जंगला ॥ अनुजव रस गत माती,
 रंग राती ॥ अ०॥ टेक ॥ गगन मंलगत इग अमि
 सरयर, निरखत प्रमद जराती ॥ ता तट इग मुग-
 ताफल तरुवर, निकलंक फूल फल जाती ॥ रं० ॥
 ॥ १ ॥ मुगतक अमिजल खावत पीवत, रंग खुमा-
 र घुमाती ॥ रं० ॥ अहनिशि शशि रवि करत वि-
 कारा, दुर्धर निमिर हराती ॥ रं० ॥ २ ॥ अनहद
 धुनि संग शंकर नाचे, निस्पृह जावरमाती ॥ रं० ॥
 निधि चारित्र ज्ञानानंद रंगें, गावत नाटक रा-
 ती ॥ रं० ॥ ३ ॥ इति ॥

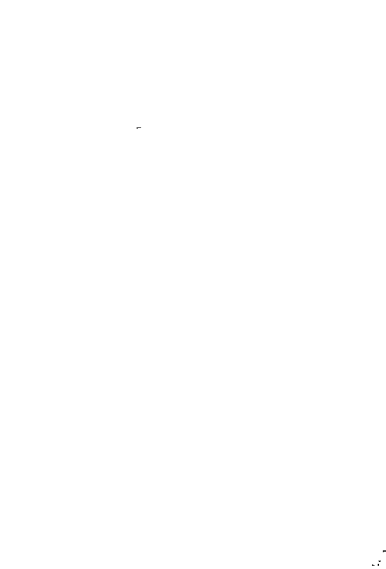
तरा कीना, मायामें छपटाना ॥ निधि संयम ज्ञा-
नानंद अनुभव, गुरुविन नाहिं छहानां रे ॥ वि० ॥ ३ ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥

॥ राग चावक ॥ योगिया रे, गुरु विन ज्ञान न
जाया ॥ टेक ॥ दुर्धर केसरी धकरी जाइ, धकरी
बाध बंधाया ॥ धकरी चहुटे बाध नचावे, देखेज न
हरखाया रे ॥ गु० ॥ १ ॥ तुरिय वेग हय चाबुक
योगे, नाग कुटुंब रुसाया ॥ समय अनादे इतउत
जटके, मम ज्ञायें जरमाया रे ॥ गु० ॥ २ ॥ खिन-
जर ज्ञानकी बात न जानी, अनुभव वासन जाया ॥
गुरु किरीया संयम ज्ञानानंद, चरण कमल छपटा-
या रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥

॥ राग धसंत ॥ अचरज एक नजरगत आयो,
ज्ञानी गुरु धतलायो ए ॥ टेक ॥ त्रिभुवनमें एक बाल
कुमारी, विरुद सति कहलाया ए ॥ अ० ॥ १ ॥ वि-
न घरमां इग पलमें निपने, नंदन तिन सुखदायी
ए ॥ रूप अनूपा चार दीकरी, ते पिन योगन जाइ
ए ॥ अ० ॥ २ ॥ जेह जनक ते बल्लभ तेहना, मात



रम पद लाइरे ॥ २० ॥ विविध तत्त्व विचार सुख-
मी, ज्ञान दरस सुरजि जाइ रे ॥ २० ॥ १ ॥ अह-
निस रवि शशि करत विकासा, सलीज अमीरस
धाइ रे ॥ २० ॥ विविध तूर घुनि सांजल बालम,
सादवाद अवगाइ रे ॥ २० ॥ ३ ॥ ध्येय ध्यान लय
चढीहे खुमारी, उत्तरे कयहु न रामी रे ॥ २० ॥
सुन निधि संयम घरनी वाचा, ज्ञानानंद सुख धामी-
रे ॥ २० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ इति श्री संयम तरंगः संपूर्णः ॥

॥ अथ ॥

श्रीजशोविजयजी कृत आनंद-
दधनजीनी स्तुतिरूप अष्टपदी

प्रारंभः ॥

॥ पद पहेलुं ॥

॥ राग कनडो ॥ मारग चखत चखत गात, आ-
नंदधन प्यारे ॥ रहत आनंदधर पुर ॥ मा० ॥ ता-
को सरूप जूप, त्रिहु लोकर्थे न्यारो ॥ धरखत मुख
पर नूर ॥ मा० ॥ १ ॥ सुमति सखीके संग, नित
नित दोरत ॥ कयहु न होतही दूर ॥ जशविजय कहे
सुनो हो आनंदधन, हम तुम मिले दूर ॥ मा० ॥ २ ॥

॥ पद बीजुं ॥

॥ आनंद धनको आनंद, सुजशही गावत ॥ रह-
त आनंद सुमता संग ॥ आनंद० ॥ सुमति सखी
ओर नवल आनंदधन, मिल रहे गंग तरंग ॥ आनंद० ॥
॥ १ ॥ मन मंजन करके निर्मल कीयो हे चित्त

तापर लगायो है अविहङ्ग रंग ॥ जसविजय कहे
सुनतही देखो, सुख पायो बोलत अजंग ॥ आनंद ॥ १ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥

॥ राग नायकी ताळ चंपक ॥ आनंद कोठ
नहिं पावे, जोइ पावे सोइ आनंदघन ध्यावे ॥ आ० ॥
आनंद कोन रूप कोन आनंदघन, आनंद गुण कोन
खलावे ॥ आ० ॥ १ ॥ सद्देज संतोष आनंद गुण प्र-
गटत, सब दुविधा मिट जाये ॥ जस कहे सोही
आनंदघन पावत, अंतर ज्योत जगाये ॥ आ० ॥ २ ॥ इति

॥ पद चौथुं ॥

॥ राग ताळ चंपक ॥ आनंद ओर ओर नहिं पा-
या, आनंद आनंदमें समाया ॥ आ० ॥ इति अर-
ति दोठ संग स्त्रीय वरजित, अरधने हास लगा-
या ॥ आ० ॥ १ ॥ कोठ आनंदघन विद्धही पैगत,
जस राय संग चरही आया ॥ आनंदघन आनंदगत
जीवन, देखनही जस गुण गाया ॥ आ० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद पांचमुं ॥

॥ राग नायकी ॥ आनंद कोठ हम देखलायो,

॥ कहा हूँ दत्त तुं भूख पंठी ॥ आनंद हाट
न, वेकावो ॥ आ० ॥ १ ॥ एसी दशा आनंद सम
प्रगटत, ता सुख अखख खखावो ॥ जोइ पावे सोइ
कहु न कहावत, सुजस गावत ताको वधावो ॥ आ० ॥ २ ॥

॥ पद ठहुं ॥

॥ राग कानडो ताख रूपक ॥ आनंदकी गत
आनंदघन जाणे ॥ आ० ॥ वाइ सुख सहज अचख
अखख पद, वा सुख सुजस बखाने ॥ आ० ॥ १ ॥
सुजस विखास जय प्रगटे आनंदरस, आनंद अक-
य खजाने ॥ आ० ॥ २ ॥ एसी दशा जब प्रगटे चित्त
अंतर, सोहि आनंदघन पिठाने ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥ एरी आज आनंद जयो मेरे ॥ तेरो मुख नि-
रख निरख रोम रोम, शीतल जयो अंगो अंग ॥
एरी० ॥ १ ॥ शुरू समजख समतारस जीखत, आ-
नंदघन जयो अनंत रंग ॥ एरी० ॥ २ ॥ एसी आ-
नंद दशा प्रगटी चित्त अंतर, ताको प्रजाव चखत
निरमल गंग ॥ वाही गंग समता दोउ मिल रहे,

जसविजय जीवत ताके संग ॥ एरी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ राग कानडो ताळ ॥ आनंदधनके संग सु
जसही मिले जब, तव आनंद सम जयो सुजस, पा-
रस संग खोहा जो फरसत, कंचन होतही ताके कस
॥ आ० ॥ १ ॥ खीर नीर जो मिल रहे आनंद जस,
सुमति सखीके संग जयो हे एकरस ॥ जब खपाइ
सुजस विद्यास, जये सिद्ध स्वरूप लीये धस मस
॥ आ० ॥ २ ॥

॥ इति श्रीजसोविजयजी कृत आनंदधनजीनी
स्तुतिरूप अष्टपदी संपूर्णा ॥

इति श्री जसविद्यास तथा विनय
विद्यास अने ज्ञान विद्यासाहय
रागमाळा समाप्ताः

